مكتبة اهل السنة

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
अल्लाह के रसुल ﷺ ने फरमाया ः
तुम उस तरह नमाज़ पढ़ो जिस तरह मुझे पढ़ता देखते हो |
(सहीह बुखारी ः 628)
عشر مسائل الصلاة
नमाज़ के दस मसाईल
मसाईल ः
नियत की फर्जीयत
सफों की दूरूस्तगी
रफउल यदैन
कियाम में सीने पर हाथ
फातेहा खल्फुल इमाम
आमीन बिल ज़हर
रफे सब्बाबा
जलसाए इस्तराहत
तवर्रूक
खड़े होते वक्त ऐतमाद
الناشر
مكتبة اهل السنة

फेहरीस्ते मज़ामीन

मुकदमतुल किताब

إنَّ الْـحَـمْـدَ لِـلّٰـهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ أَنْفُسِنَا وَسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ، أَمَّا بَعْدُ:

فَـإِنَّ خَيْـرَ الْـحَـدِيْـثِ كِتَـابُ الـلّٰـهِ وَخَيْـرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ وَشَـرَّ الْأُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ.

- दिने इस्लाम में कल्में तौहीद के बाद दूसरा रूक्न नमाज़ है | नमाज़ अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल करने का बेहतरीन जरीया है |
- कियामत के दिन बंदे के आमाल में सब से पहले नमाज़ ही का हिसाब होगा | अगर वह दुरुस्त निकल आई तो वह (शख्स) फलाह पा गया और कामियाब हुवा और अगर उस में बिगाड निकला तो वह (शख्स) रूस्वा और बरबाद हो गया |
  (सुनन अबु दाउद किताबुस्सलात हदीस नं ः 822 व सुनन इब्ने माजा हदीस नं ः 1426)
- नमाज सुन्नते रसुल ﷺ के मुताबिक अदा करना जरूरी है क्योंकि रसुलुल्लाह ﷺ ने फरमाया ः (صل كما رايتموني اصلي)"तुम उस तरह़ नमाज़ पढो जिस तरह़ मुझे पढता देखते हो|" **(सहीह बुखारी ः किताबुल अज़ान हदीस नं ः 628)**
- नमाज सुन्नते रसुल ﷺ के मुताबिक अदा की जायेगी तो दर्जे कबुलियत को पहुंच सकती है वरना नहीं |

अल्लाह तआला का फरमान है ः "नमाज़ को कायम करो, जकात अदा करो और अल्लाह के रसुल ﷺ की फरमाबरदारी में लगे रहों ताकि तुम पर रहम किया जाये |" **(सुरह नूर आयत नं ः 56)**

- इस आयत की रूह से यही हुक्म सादर किया गया है कि नमाज़ में उसके अरकान और शराइत का ख्याल रखा जाये | इसी अहमियत के पेशेनजर हमने इस मुख्तसर से रिसाले में नमाज़ के दस मसाइल जिक्र किये है | और इन मसाइल को रसुलुलाहﷺ से, आपके सहाबा ﷡ से, ताबई अजाम ﷫ से और तबाए ताबईन ﷫ से और अइम्माए मुहद्दीसीनीन ﷫से साबित किया
गया है |
- अल्लाह तआला से दुआ है कि अल्लाह तआला ये किताब लोगों के लिए नफा बख्श बनाये और लोगों को सुन्नते रसुलﷺ पर अमल करने का जरीया बनाए |(आमीन)
- इस किताब में जो सहीह मवाद है उसे अल्लाह तआला और उसके रसुल के तरफ मन्सूब किया जाएगा, अगर इसमें कोई कमी व कोताही है तो हमारी और शैतान की तरफ से है क्योंकि इंसान महलुल खता व निसीयान है |

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمَ

नाशीर

मकतबा अहलुस्सुन्नाह

हदीस के मुआमले में छानबीन और इहतियात

- जिस तरह अल्लाह तआला ने अपनी इतात को फर्ज किया है उसी तरह अपने रसुलﷺ की इतात को भी लाजीम करार दिया है |

ऐ इमानवालों ! अल्लाह तआला की इताअत करों और (उसके) रसुलﷺ की इताअत करों और (उसकी इताअत से हटकर)अपने आमाल बरबाद मत करों |(सुरह मुहम्मद आयत नं ः 33)	﴿يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوٓا اَعْمَالَكُمْ﴾ (محمد:٣٣)

- अल्लाह तआला का फरमान हैं ः“और जो कुछ रसुलﷺ तुम्हें दे उसे ले लो,और जिससे रोके उससे रूक जाओ |और अल्लाह से डरते रहों, यकिनन अल्लाह तआला सख्त सज़ा देने वाला है |(सुरह हश्र आयत नं ः 7)
- मालुम हुआ कि कुरआन मजीद की तरह सुन्नत नबवीﷺ भी शरई दलील और हुज्जत है | मगर सुन्नत से दलील लेने से पहले इस बात का इल्म होना जरूरी है कि क्या वो सुन्नत रसुलुल्लाह ﷺ से साबित भी है या नहीं ?

अल्लाह के रसुलﷺ फरमाते हैं कि ः

“आखरी ज़माने में दज्जाल और कज़्ज़ाब(झूठे) होंगे वो तुम्हें ऐसी ऐसी अहादीस सुनाएंगे जिन्हें तुमने और तुम्हारे आबा व अज्दाद ने नहीं सुना होगा | लेहाजा उनसे अपने आप को बचाना , कहीं ऐसा ना हो कि वो तुम्हें गुमराह करदे और फितने में ड़ाल दे |” (सहीह मुस्लिम ःअल मुकदमा हदीस नं ः 7)	قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: «يَكُونُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ دَجَّالُونَ كَذَّابُونَ، يَأْتُونَكُمْ مِنَ الأَحَادِيثِ بِمَا لَمْ تَسْمَعُوا أَنْتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ، فَإِيَّاكُمْ وَإِيَّاهُمْ، لَا يُضِلُّونَكُمْ وَلَا يَفْتِنُونَكُمْ» (صحيح مسلم المقدمه : رقم : 7)

अल्लाह के रसुलﷺ फरमाते हैं कि ः

मुझपर झूठ बोलना किसी दूसरे पर झूठ बोलने की तरह नहीं है , जिसने जानबूझकर मुझपर झूठ बोला तो वो अपना ठिकाना (जहन्नम की) आग में बना ले |(सहीह बुखारी किताबुल जनाइज हदीस नं ः 1291)	«إِنَّ كَذِبًا عَلَيَّ لَيْسَ كَكَذِبٍ عَلَى أَحَدٍ، مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ»

- इमाम दारे कतनीرحمه الله फरमाते हैं कि ः "रसुलुल्लाहﷺ ने अपनी तरफ से (बात) पहुंचा देने का हुक्म देने के बाद अपनी ज़ात पाक पर झूठ बोलने वाले को आग की वइद (सजा) सुनाई है | लेहाजा इस में इस बात की दलील है कि आपﷺ ने अपनी तरफ से ज़ईफ की बजाए सहीह और बातिल के बजाए हक के पहुंचा देने का हुक्म दिया है ना कि हर उस चीज़ के पहुंचा देने का जिसकी निसबत आपﷺ की तरफ कर दी गई हो | इस लिए नबीﷺ ने फरमाया ः "आदमी के झूठा होने के लिए यही काफी है कि वो हर सुनी सुनाई बात बयान करे |"
(सहीह मुस्लिम ःअल मुकदमा हदीस नं ः 7)
- इमाम शाफई फरमाते है कि ः "इब्ने सीरीन, इब्राहीम नखई, ताऊस और दीगर ताबईन का यही मज़हब है कि हदीस सिर्फ सिका (सहीह रावीयों) से ही लि जायेगी और मुहद्दीसीन में से मैंने किसी को इस मज़हब का मुखालिफ नहीं पाया |"(अल तमहीद लि इब्ने अब्दुल बर)
- इमाम मुस्लिमرحمه الله फरमाते है कि ः "जो शख्स जईफ हदीस के जोअफ (कमजोरी) को जानने के बावजूद उस जोअफ (कमजोरी) को बयान नहीं करता तो अपने इस काम की वजह से गुनाहगार और मुसलमानों को धोका देता है क्योंकि मूमकिन है कि उसकी बयान करदा अहादीस को सुनने वाला उन सब पर या बाज़ पर अमल करे और मूमकिन है कि वो सब अहादीस या बाज़ अहदीस अकाजीब (यानी झूठ) हो और उनकी कोई असल ना हो जबकि सहीह अहादीस इस कदर है कि उनके होते हुए जईफ अहादीस की जरूरत ही नहीं |

बहुत से लोग जईफ और मजहुल असानीद वाली अहादीस को जानने के बावजूद बयान करते है महेज इस लिए कि अवामून्नास (यानी लोगों) में उनकी शोहरत हो और ये कहा जाए कि 'उनके पास बहुत अहादीस है और उसने बहुत किताबें तालीफ कर दी हैं' "जो शख्स इल्म के मामले में इस रवीश को इख्तियार करता है उसके लिए इल्म में कूछ हिस्सा नहीं और उसे आलीम कहने की बजाए जाहील कहना ज्यादा मुनासिब है |"(सहीह मुस्लिम ःअल मुकदमा सफा नं ः 177-179)

- शैखुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिय्या ﷫ कहते है कि ः "इमामों में से किसी ने नहीं कहा कि ज़ईफ हदीस से वाजीब या मुस्तहब अमल साबीत हो सकता है, जो शख्स ये कहता है उसने इज्माअ की मुखालिफत की |" (अत्तवस्सुल वल वसीला)
- मालूम हुआ कि सहीह और ज़ईफ रिवायात की पहचान और उसमें तमीज करना इस लिए भी ज़रूरी है कि रसुलल्लाह ﷺ की तरफ गैर साबित शूदा हदीस की निसबत करने से बचा जा सके|

इत्तेबा ए किताब व सुन्नत

अल्लाह और उसके रसुलﷺ की इताअत वाजीब है

अल्लाह तआला का फरमान हैं ः

और जो कुछ रसुलﷺ तुम्हें दे उसे ले लो,और जिससे रोके उससे रूक जाओ |और अल्लाह से डरते रहों, यकिनन अल्लाह तआला सख्त सज़ा देने वाला है | (सुरह हश्र आयत नं ः 7)	﴿ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ ﴾ (الحشر: ٧)

अल्लाह और उसके रसुलﷺ की नाफरमानी में आमाल की बरबादी है

अल्लाह तआला का फरमान हैं ः

ऐ इमानवालों ! अल्लाह तआला की इताअत करों और (उसके) रसुलﷺ की इताअत करो और (उसकी इताअत से हटकर)अपने आमाल बरबाद मत करो |(सुरह मुहम्मद आयत नं ः 33)	﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا اَعْمَالَكُمْ﴾ (محمد:٣٣)

अल्लाह और उसके रसुलﷺ की नाफरमानी में दुनिया और आखिरत में बरबादी है

अल्लाह तआला का फरमान हैं :

पस ! जो लोग रसुलुल्लाहﷺ के हुक्म की मुखालिफत करते हैं, उन्हें डरना चाहिए कि उन पर कोई बला नाजील ना हो जाए या कोई दर्दनाक आजाब ना आ घेरे | **(सुरह नूर आयत नं : 63)**	﴿فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾﴾ (النور:٦٣)

अल्लाह तआला का फरमान हैं :

जो शख्स हिदायत के वाजेह हो जाने के बावजुद रसुलﷺ की मुखालिफत करे और मोमीनों की राह छोड़ कर दूसरी राह इख्तियार करे, तो हम उसे उधरही फेर देते हैं जिधर उसने रूख किया है, फिर हम उसे जहन्नम में झोंक देंगे जो बदतरीन ठिकाना है | **(सुरह निसा आयत नं : 115)**	﴿وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٥﴾﴾ (النساء:١١٥)

कियामत के दिन सबसे पहले नमाज का हिसाब होगा

अल्लाह के रसुलﷺ ने फरमाया ः

कियामत के दिन बंदे के आमाल में सब से पहले नमाज़ ही का हिसाब होगा | अगर वह दुरूस्त निकल आई तो वह (शख्स) फलाह पा गया और कामियाब हुवा और अगर उस में बिगाड निकला तो वह (शख्स) रूस्वा और बरबाद हो गया |(सुनन तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा) (सहीह़)(सहीह़ अल जामे ः 2020)	إِنَّ أَوَّلَ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ عَمَلِهِ صَلَاتُهُ فَإِنْ صَلُحَتْ فَقَدْ أَفْلَحَ وَأَنْجَحَ وَإِنْ فَسَدَتْ فَقَدْ خَابَ وَخَسِرَ (ت ن هـ) عن أبي هريرة (صحيح) [صحيح الجامع 2020]

नबीﷺसे साबित तरीके पर नमाज अदा करना जरूरी है

अल्लाह के रसूलﷺ ने फरमाया ः

तुम उस तरह़ नमाज़ पढो जिस तरह़ मुझे पढता देखते हो | (सहीह बुखारी ः किताबुल अज़ान हदीस नं ः 628)	صَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أُصَلِّي [خ: الآذان : 628]

चारों इमामों के कौल

1. इमाम अबु हनिफा ﷫

आप का नाम नोमान बिन साबित ﷫ है | आप इमाम अहले इराक से मशहुर है | आप 80 हिजरी में कूफा में पैदा हुए और 150 हिजरी में वफात पा गए |

इमाम अबु हनिफा ﷫ फरमाते है कि ः

जब सहीह हदीस साबित हो जाए तो वही मेरा मजहब है |[1] (रद्दूल मुख्तार अला दूर्रे मुख्तार लिइब्ने आबीदीन ः 68/1) इमाम अबु हनीफा ﷫ से पूछा गया कि ः "अगर आप का कोई कौल (बात) कुरआन मजीद के खिलाफ हो तो क्या किया जाए ? इमाम अबु हनीफा ﷫ ने जवाब दिया कि कुरआन मजीद के मुकाबले में मेरा कौल छोड दो	फिर पूछा गया ः अगर आप का कौल सुन्नते रसुल ﷺ के खिलाफ हो तो क्या किया जाए ?" इमाम अबु हनीफा ﷫ ने जवाब दिया कि सुन्नते रसुल ﷺ के मुकाबले में मेरा कौल छोड दो| फिर पूछा गया ः अगर आप का कौल सहाबा रज़िअल्लाह अन्हुम के खिलाफ हो तो क्या किया जाए ? तो उन्होंने फरमाया कि ः सहाबा ﷡ के कौल के मुकाबले में मेरा कौल छोड दो |"(ये कौल अकिदतुल जय्यिद में है | हकिकतुल फिकह अज् मोहम्मद युसुफ सफा नं ः 69) इमाम अबु हनिफा ﷫ फरमाते हैं कि ः "किसी शख्स के लिए हलाल नहीं कि वो हमारी बात को ले ले जब तक की उसे ये मालूम ना हो जाए कि ये बात हमने कहां से ली है |"[2]	اِذَا صَحَّ الْحَدِيْثُ فَهُوَ مَذْهَبِى . ❶ وقال : إذا قلت قولاً وكتاب الله يخالفه ، فاتركوا قولي لكتاب الله . قيل : إذا كان قول رسول الله ﷺ يخالفه ؟ قال : اتركوا قولي لخبر الرسول ﷺ إذا كان قول الصحابة يخالفه ؟ قال: اتركوا قولي لقول الصحابة . (لاَ يَحِلُّ لِاَحَدٍ اَنْ يَاخُذَ بِقَوْلِنَا مَا لَمْ يَعْلَمْ مِنْ اَيْنَ اَخَذْنَاهُ) ❷

[1] ❶ ردّ المحتار على الدر المختار، لابن عابدين: ١/ ٦٨.

[2] ❷ الانتقاء فى فضائل الثلاثة الائمة الفقهاء، ص: ١٤٥

2. इमाम मालिक बिन अनस رحمه الله

आप का नाम अबु अब्दुल्लाह मालिक बिन अनस رحمه الله है | आप इमाम दारूल हिजरा के लकब से मशहुर है | आप 93 हिजरी में मदीना में पैदा हुए और 179 हिजरी में मदीना में वफात पा गए |

इमाम मालिक رحمه الله फरमाते हैं ः

यकिनन मैं एक इन्सान हूं मेरी बात गलत भी हो सकती है और सहीह भी, लेहाजा मेरी राय में नजर दौडाओं और जो बात तुम्हें किताब व सुन्नत के मुआफिक लगे उसे ले लो और जो किताब व सुन्नत के मुखालिफ हो उसे छोड दो |[3](जामेउल बयानुल इल्म व फ़ज़ल इब्ने अब्दुल बर सफा ः 2/ 32) इमाम मालिक رحمه الله फरमाते हैं ः "नबी ﷺ के बाद हर शख्स की बात कबुल भी की जा सकती है और रद्द भी की जा सकती है |" (मगर इमामुल अम्बिया ﷺ की बात को कबुल ही किया जाएगा, रद्द नहीं किया जा सकता |)[4](अल इर्शादुल सालिक लि इब्ने अब्दुल हादी ः 1/ 227)	(اِنَّـمَا اَنَا بَشَرٌ اُخْطِیءُ وَاُصِیْبُ، فَانْظُرُوْا فِیْ رَاْیِیْ، فَکُلُّ مَا وَافَقَ الْکِتَابَ وَالسُّنَّةَ فَخُذُوْهُ، وَکُلُّ مَا یُخَالِفُ الْکِتَابَ وَالسُّنَّةَ فَاتْرُکُوْهُ.) ❸ (لَیْسَ اَحَدٌ بَعْدَ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِلَّا وَیُؤْخَذُ مِنْ قَوْلِهٖ وَیُتْرَکُ، اِلَّا النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ.) ❹

[3] الجامع لابن عبدالبر: ٣٢/٢۔ أصول الاحكام لابن حزم: ١٤٩/٦
[4] ارشاد السالك، لابن عبدالهادى : ٢٢٧/١۔ صفة صلاة النبي ﷺ، ص: ٤٩.

3. इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफई رحمه الله

आप का नाम अबु अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इदरीस शाफई رحمه الله है | आप 150 हिजरी में पैदा हुए और 204 हिजरी में मिस्र में वफात पा गए |

इमाम शाफई رحمه الله फरमाते हैं कि ः

“इस बात पर तमाम मुसलमानों का इज्माह(इत्तेफाक) है कि जिस शख्स को सुन्नते रसुल ﷺ मालूम हो जाए उसके लिए किसी आदमी के कौल के खातिर सुन्नत को छोड देना जायज नहीं |”[5] (एअलामल मोकिईन लि इब्ने कय्यिम अलजौजी ः 2/361)	(اَجْمَعَ الْمُسْلِمُوْنَ عَلٰى مَنْ اِسْتَبَانَ لَهٗ سُنَّةٌ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ لَمْ يَحِلُّ لَهٗ اَنْ يَدَعَهَا لِقَوْلِ اَحَدٍ .) 5
जब तुम मेरी किताब में कोई खिलाफे सुन्नत बात देखों तो तुम रसुलुल्लाह ﷺ की सुन्नत को इख्तियार करना और मेरी बात को छोड़ देना |[6] (एअलामल मोकिईन लि इब्ने कय्यिम अलजौजीः 2/361)	(اِذَا وَجَدْتُّمْ فِىْ كِتَابِىْ خِلَافَ سُنَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَقُوْلُوْا بِسُنَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ وَدَعُوْا مَا قُلْتُ .) 6
जब सहीह हदीस साबित हो जाए तो वही मेरा मजहब है |[7] (अल मज्मआ शरहुल मजहब ः 1/104)	(اِذَا صَحَّ الْحَدِيْثُ فَهُوَ مَذْهَبِىْ) 7

5 علام الموقعين لابن القيم ٦١/٢-٣، الفلانى ص ٦٨

6 علام الموقعين لابن القيم ٦١/٢-٣، الفلانى ص ٦٨

7 المجموع شرح المذهب: ١/ ١٠٤.

4. इमाम अहमद बिन हम्बल رحمة الله عليه

आप का नाम अबु अब्दुल्लाह अहमद बिन मुहम्मद बिन हम्बल رحمه الله है | आप 164 हिजरी में बगदाद में पैदा हुए और 241 हिजरी में बगदाद में वफात पा गए |

इमाम अहमद बिन हम्बल رحمه الله फरमाते हैं कि ः

जिस ने रसुलुल्लाह ﷺ की हदीस को रद्द कर दिया वो हलाकत के किनारे खड़ा है |[8] (इब्ने अल जौजी सफा ः 182) इमाम अहमद رحمه الله फरमाते है कि ः"ना मेरी तकलीद करना, ना इमाम मालिक رحمه الله की,ना इमाम शाफई رحمه الله की,ना इमाम अवजाई رحمه الله की और ना इमाम सौरी رحمه الله की तकलीद ना करना | बल्कि (इल्म) वहां से हासिल करना जहां से उन अइम्मा ने इल्म हासिल किया (यानी कुरआन व सुन्नत से)|"[9] (एअलामल मोकिईन इब्ने कय्यिम अलजौजी सफा ः 302/2) एक और मकाम पर इर्शाद फरमाया ः "इमाम अवजाई رحمه الله, इमाम मालिक رحمه الله, और इमाम अबु हनिफा رحمه الله की राय तो राय ही है, मेरे नकदिक उन का दर्जा हुज्जत ना हो ने के बराबर है, दलिल व हुज्जत तो सिर्फ अहादीस और असार है |"[10]
(जामेउल बयानुल इल्म व फजल इब्ने अब्दुल बर ः2/149)

(مَـنْ رَدَّ حَدِيْثَ رَسُوْلِ ﷺ فَهُوَ عَلَى شَفَا هَلَكَةٍ .) (8)

(لاَ تُقَلِّدْنِي ، وَلاَ تُقَلِّدْ مَا لِكًا وَلاَ الشَّافِعِيَّ وَلاَ الْاَوْزَاعِيَّ وَلاَ الثَّوْرِيَّ ، وَخُذْ مِنْ حَيْثُ اَخَذُوْا .) (9)

(رَأْيُ الْاَوْزَاعِيْ ، وَرَأْيُ مَالِكٍ ، وَرَأْيُ اَبِي حَنِيْفَةَ كُلُّهُ رَأْيٌ ، وَهُوَ عِنْدِيْ سَوَاءٌ وَاِنَّمَا الْحُجَّةُ فِي الْآثَارِ .) (10)

8 ابن الجوزی ص۱۸۲

9 اعلام الموقعین۲/۳۰۲

10 جامع بيان العلم، لابن عبد البر: ٢/ ١٤٩.

1.नियत की फर्जीयत

हदीस़

अमीरूल मुमीनीन सय्यदना उमर बिन खत्ताब ﷺ फरमाते है कि ः

अल्लाह के रसुल ﷺ ने फरमाया ः “आमाल का दारोमदार नियतों पर है हर शख्स के लिए वहीं है जो उसने नियत की |”(सहीह मुस्लिम ः किताबुल इमारा हदीस नं ः 1907 , सहीह बुखारी ः किताब बदाउल वह्यी हदीस नं ः 1)	عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطّابِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: «إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ، وَإِنَّمَا لِامْرِئٍ مَا نَوَى،..الخ

तश्रीहुल हदीस़

1. इस हदीसे पाक से मालुम हुआ कि वुजु, गुस्ल और नमाज़ वगैरा के लिए नियत करना फर्ज है, इसीपर फुक्हा का इज्माअ है |
2. याद रहे कि नियत दिल के इरादे को कहते है , बाज लोग उर्दु हिंदी जबान में बड़ी बड़ी नियते करते है मसलन कहते है कि ः “दो या तीन या चार रकआत नमाज पढ़ता हूं वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा कआबे शरीफ की तरफ और ताबे इमाम के”
3. ज़बान से नियत करना किसी हदीस से साबित नहीं हैं, इसीलिए बहुत से उल्माओं ने इस अमल को बिदत (यानी दिन में नया अमल) करार दिया है |
4. शैखुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिय्या ﷬ फरमाते है कि ः “नियत दिल के इरादे और कस्द को कहते है, कस्द और इरादे का मकाम दिल है ज़बान नहीं |” (अल फतावा अल कुबरा ः जिल्द ः 1 सफा :1)
5. इमाम इब्ने कय्यिम ﷬ फरमाते है कि ः “जबान से नियत करना ना नबी ﷺ साबित है और ना किसी सहाबी ﷺ से |”और फरमाया ः “ज़बान से नियत करना बिदत है और नियत किसी काम के इरादे का नाम है जिसकी ज़गह सिर्फ दिल है और उसका ज़बान से कोई ताअल्लुक नहीं |”(जाअदुल मआद ः 1/69 व इगासतुल लहफान ः 1/136)
6. इमाम नववी ﷬ फरमाते है कि ः “नियत सिर्फ दिल के इरादे को ही कहते है |” (शरहुल मज़हब ः 1/352)

7. हनफी उल्माओं ने भी इसके बिदत होने का एतराफ किया है ः

- अल्लामा इब्ने आबीदीन हनफी ﷫ फरमाते है कि ः"ज़बान से नियत करना बिदत है |" (रद्दुल मुख्तार ः 1/279)
- मुल्ला अली कारी हनफी﷫ फरमाते है कि ः "अल्फाज़ के साथ नियत करना ज़ायज़ नहीं क्योंकि ये बिदत है |"(मिरकातुल मफातेह शरह मिश्कातुल मसाबिह ः 1/41)
- अल्लामा इब्ने हमाम हनफी﷫ फरमाते है कि ः "रसुलुल्लाह ﷺ और सहाबा ﷡ में से किसी से भी ज़बान के साथ नियत करना मन्कुल नहीं है |"(फत्हुल कदीर ः 1/232)
- मौलाना अन्वर शाह कश्मीरी देवबंदी हनफी﷫ फरमाते है कि ः "नियत सिर्फ दिल का मामला है |"(फैजुल बारी ः 1/8)
- और मुख्तलिफ किताबों में इस अमल को बिदत ही में शुमार किया गया हैं | (उम्दुर्रिआया हाशिया शरह विकाया ः 1/159 व सुनन वलमुबतदआत ः 1/28)

8. किसी भी अमल के अल्लाह तआला के नजदीक कबुल होने के तीन शर्ते हैं ः

i. आमील (अमल करने वाले) का अकीदा किताब व सुन्नत और फहमे सलफ सॉलेहिन के मुताबिक हो |

ii. अमल और तरीकेकार भी किताब व सुन्नत के मुताबिक हो |

iii. उस अमल को सिर्फ अल्लाह तआला की रज़ा (यानी खुश्नुदी) के लिए सरअंजाम दिया जाए |

2. सफों की दूरूस्तगी

हदीस नं ः 1

सय्यदना अनस बिन मालिक ﷺ फरमाते है कि ः

रसुलुल्लाह ﷺ ने फरमाया ः सफों को बराबर करलो, मैं तुम्हें अपने पिछे से भी देखता हुं(ये आप ﷺ का मोजिजा था)(अनस ﷺ कहते है कि)और हम में से हर शख्स ये करता कि(सफ में)अपना कंधा अपने साथी के कंधे से और अपना कदम उसके कदम से मिला देता था | (सहीह बुखारी किताबुल अजान बाब ः सफ में कंधे से कंधा और कदम से कदम मिलाना हदीस नं ः 725)	(1) ـ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ قَالَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ أَقِيمُوا صُفُوفَكُمْ فَإِنِّي أَرَاكُمْ مِنْ وَّرَاءِ ظَهْرِي وَكَانَ أَحَدُنَا يُلْزِقُ مَنْكِبَهُ بِمَنْكِبِ صَاحِبِهِ وَقَدَمَهُ بِقَدَمِهِ.

हदीस नं ः 2

सय्यदना नोमान बिन बशीर ﷺ फरमाते हैं ः

रसुलुल्लाह ﷺ ने लोगों की तरफ अपना रूख किया और फरमाया ः"अपनी सफों को बराबर करलो , अपनी सफों को बराबर करलो , अपनी सफों को बराबर करलो | अल्लाह की कसम ! अगर तुमने सफों को बराबर नहीं किया तो अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों में इख्तेलाफ और फूट डाल देगा |"सय्यदना नोमान ﷺ कहते है कि ः "फिर मैने देखा कि हम में से हर शख्स अपने कंधे को अपने साथी के कंधे से और अपना घुटना अपने साथी के घुटने से और अपना टखना अपने साथी के टखने से मिलाकर और जोडकर खडा होता था |"(सुनन अबु दाउद किताबुस्सलात बाब ः सफों को बराबर करना हदीस नं ः 662)	(2) - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ: حدثنا وَكِيعٌ عن زَكَرِيَّا بنِ أبي زَائِدَةَ، عن أبي الْقَاسِمِ الْجَدَلِيِّ قال: سَمِعْتُ النُّعْمَانَ بنَ بَشِيرٍ يقولُ: أَقْبَلَ رسولُ الله ﷺ عَلَى النَّاسِ بِوَجْهِهِ فقال: «أَقِيمُوا صُفُوفَكُمْ» ثَلَاثًا «وَالله! لَتُقِيمُنَّ صُفُوفَكُمْ أَوْ لَيُخَالِفَنَّ اللهُ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ». قال: فَرَأَيْتُ الرَّجُلَ يُلْزِقُ مَنْكِبَهُ بِمَنْكِبِ صَاحِبِهِ وَرُكْبَتَهُ بِرُكْبَةِ صَاحِبِهِ وَكَعْبَهُ بِكَعْبِهِ. [صحيح] أخرجه أبي داود ح: ٦٦٢ البيهقي: ٣/ ١٠٠، ١٠١ وصححه ابن خزيمة، ح: ١٦٠، وابن حبان، ح: ٣٩٦

हदीस नं ః 3

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फरमाते है कि ः

रसुलुल्लाह ﷺ ने फरमाया ः "सफों को दूरूस्त करलो , कंधो को बराबर रखो ,(सफों के दरम्यान)खाली जगह ना रहने दो और अपने भाईयों के हाथों में नर्म हो जाओ | सफों के अंदर शैतान के लिए जगह ना छोडो | जिस ने सफ को मिलाया अल्लाह भी उसे (अपनी रहमत से) मिलायेगा और जिस ने सफ को काटा अल्लाह भी (अपनी रहमत से) उसको काट देगा |"(सुनन अबु दाउद किताबुस्सलात बाब ः सफों को बराबर करना हदीस नं ः 666)	(3) رسول الله ﷺ قال: «أقيموا الصُّفوف وحاذوا بين المناكب وسدّوا الخلل ولينوا بأيدي إخوانكم» - لم يقل عيسى بأيدي إخوانكم - «ولا تذروا فرجات للشيطان، ومن وصل صفًا وصله الله ومن قطع صفًا قطعه الله». [إسناده حسن] سنن ابي داود: ح: ٦٦٦ وصححه ابن خزيمة، ح: ١٥٤٩، والحاكم على شرط مسلم: ١/٢١٣، ووافقه الذهبي.

हदीस नं ः 4

सय्यदना अनस बिन मालिक रजि ﷺ फरमाते है कि ः

रसुलुल्लाह ﷺ ने फरमाया ः "अपनी सफों को बराबर करलो बिलाशुब्हा सफों का बराबर करना नमाज कायम करने में दाखिल है |" (सहीह बुखारी किताबुल अजान बाब ः सफों को बराबर करना नमाज को पूरा करने में से है हदीस नं ः 723)	(4) ـ حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ سَوُّوا صُفُوفَكُمْ فَإِنَّ تَسْوِيَةَ الصُّفُوفِ مِنْ إِقَامَةِ الصَّلَاةِ.

जरूरी नोट

- बाज लोग नमाज में सफों के दरम्यान खूली जगह छोड़ते है और कंधे से कंधा और कदम से कदम नहीं मिलाते उन्हें इस अजीम सुन्नत के वाजेह हो जाने के बावजूद अल्लाह तआला से डरना चाहिए क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है ः

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ (سورة المحمد :33)

"ऐ इमानवालों ! अल्लाह की इताअत करो और उसके रसुल ﷺ इताअत करो और अपने आमाल बरबाद मत करो \|"(सुरह मुहम्मद आयत नं ः 33)

3. रफउल यदैन रब की ता-जीम

रफउल यदैन यानी दोनों हाथों का उठाना नमाज में चार जगह साबित है ः 1.शुरू नमाज में तक्बीरे तहरिमा के वक्त 2.रूकु में जाते हुए 3.रूकु के बाद 4.तिसरे रकआत के लिए उठते वक्त | इन मकामात पर रफउल यदैन करने के दलाईल दर्ज जैल है ः

1. सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ से मर्वी हदीस़

सय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने उमर ؓ फरमाते हैं कि ः

रसुलुल्लाह ﷺ नमाज शुरू करते वक्त अपने दोनों हाथों को कंधोतक उठाते, इसीतरह जब रूकु के लिए अल्लाहुअक्बर कहते और जब अपना सर रूकु से उठाते तो दोनों हाथ भी उठाते और रूकु से सर मुबारक उठाते हुए “समिअल्लाहुलिमन् हमिदह रब्बना वलकल हम्द”कहते थे, और सज्दों में ऐसा नहीं करते थे |(सहीह बुखारी ः किताबुल अज़ान हदीस नं ः 735 , सहीह मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस ः 390)	(1) ـ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ أَيْضًا وَقَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي السُّجُودِ.

सय्यदना नाफे ؒ फरमाते हैं ः

सय्यदना (अब्दुल्लाह) इब्ने उमर ؓ जब नमाज़ में दाखिल होते तो तकबीर कहते और अपने दोनों हाथ को उठाते और जब रूकु करते तो अपने दोनों हाथ को उठाते और जब समिअल्लाहु लिमन ह़मिदह कहते तो अपने दोनों हाथ को उठाते और जब दो रकअतों के बाद खडे होते तो अपने दोनों हाथ को उठाते, और इब्ने उमर ؓ ने इस (अमल) को नबी ﷺ की तरफ मन्सूब किया है | (सहीह बुखारी ः किताबुल अज़ान हदीस नं ः 739)	(2) حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَرَفَعَ ذَلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى نَبِيِّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَوَاهُ حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

2. सय्यदना मालिक बिन हुवैरस ؓ से मर्वी हदीस़

सय्यदना अबु किलाबा ؒ से रिवायत है कि ः

उन्होंने सय्यदना मालिक बिन हुवैरस ؓ को देखा कि जब वो नमाज शुरू करते तो तक्बीर के साथ दोनों हाथों को उठाते, जब रूकु में जाने का इरादा करते तो दोनों हाथों को उठाते और जब रूकु से सर उठाते तो उस वक्त भी दोनों हाथों को उठाते और उन्होंने बयान किया कि रसुलल्लाह ﷺ भी इसीतरह किया करते थे |
(सहीह बुखारी ः किताबुल अज़ान हदीस नं ः 737,सहीह मुस्लिम ः किताबुस्सलात हदीस ः 391)

(3) ۔ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْوَاسِطِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ أَنَّهُ رَأَى مَالِكَ بْنَ الْحُوَيْرِثِ إِذَا صَلَّى كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَحَدَّثَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَنَعَ هٰكَذَا.

3. सय्यदना वाईल बिन हुज्र ؓ से मर्वी हदीस़

सय्यदना वाइल बिन हुज्र ؓ का बयान है कि ः

उन्होंने रसुलल्लाह ﷺ को देखा कि नबी ﷺ ने नमाज शुरू करते वक्त अपने दोनों हाथ उठाए और तक्बीर कहीं, इस हदीस के रावी हम्माम ؒ का बयान है कि रसुलुल्लाह ﷺ ने दोनों हाथ कानों तक उठाए और चादर ओड ली इसके बाद दाया हाथ बायें हाथपर रखा | फिर आप ﷺ ने चादर में से अपने हाथों को बाहर निकालके कानों तक उठाकर तक्बीर पढी इस के बाद रूकु में गए | और कयाम की हालत में(यानी रूकुसे उठकर)समिअल्लाहु लिमन हमिदाह पढकर दोनों हाथों को उठाए और फिर अपने दो हथेलियों के दरम्यान सज्दा किया |(सहीह मुस्लिम ः किताबुस्सलात हदीस नं ः 401)

(4) عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَفَعَ يَدَيْهِ حِينَ دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ وَصَفَ هَمَّامٌ حِيَالَ أُذُنَيْهِ ثُمَّ الْتَحَفَ بِثَوْبِهِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ أَخْرَجَ يَدَيْهِ مِنَ الثَّوْبِ ثُمَّ رَفَعَهُمَا ثُمَّ كَبَّرَ فَرَكَعَ فَلَمَّا قَالَ ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ)) رَفَعَ يَدَيْهِ فَلَمَّا سَجَدَ سَجَدَ بَيْنَ كَفَّيْهِ.

नोट ः वाईल बिन हुज्र ؓ सन 9 हिजरी 0 में मुसलमान हुए, ये अगले साल सर्दी के मौसम में दोबारा तश्रीफ लाए, ये नबी ﷺ का आखरी जाडा यानी सर्दी का मौसमथा और उस मौके पर भी नबी ﷺ और सहाबा ؓ को रफयदैन करते देखा |

4. अमीरूल मुमीनीन सय्यदना अली बिन अबी तालिब ﷺ से मर्वी हदीस़

सय्यदना अली ﷺ से रिवायत हैं कि ः

रसुलल्लाह ﷺ जब नमाज के लिए तक्बीर तहरिमा कहते तो अपने दोनों हाथों को कंधों के बराबर उठाते और जब रूकु का इरादा करते, और जब रूकु से सर उठाते और जब तीसरी रकआत के लिए खडे होते तो इसीरतह दोनों हाथों को उठाते | (जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 1) (हदीस की तहकीक ः इस हदीस को इमाम तिर्मिजी ने 'हसन सहीह' कहा (सुनन तिर्मिजी किताबुद्दाअवात हदीस नं ः 3423), और इमाम इब्ने खुजैमा ने(सहीह इब्ने खुजैमा किताबुस्सलात हदीस नं ः584) में सहीह कहा)	أخبرنا إسماعيلُ بنُ أبي أُوَيْسٍ حدثني عبدُ الرحمن بنُ أبي الزِّنَادِ عن مُوسىٰ بنِ عُقْبَةَ عَنْ عَبْدِ الله بن الفَضْلِ الهَاشِميِّ عن عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بنِ هُرْمُزٍ الأعْرَج عن عُبيدِ الله بن أبي رَافِع عن عَلِيِّ بن أبي طالبٍ رضي الله تعالىٰ عنه أَنَّ رسول الله ﷺ كان يَرْفَعُ يديه إذا كَبَّر للصَّلاةِ حِذْوَ مِنْكَبيْهِ وإذا أراد أن يَرْكَعَ وإذا رَفَعَ رأسه من الركوع، وإذا قام من الركعتين فعل مثل ذٰلك .

5. सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ से मर्वी हदीस़

सय्यदना अबु जुबैर ﷺ से रिवायत है कि ः

सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ जब नमाज शुरू करते तो अपने दोनों हाथों को उठाते और जब रूकु में जाते और जब रूकु से सर उठाते तो तबभी अपने दोनों हाथों को उठाते | और कहते थे कि रसुलुल्लाह ﷺ भी इसीतरह किया करते थे|(सुनन इब्ने माजा किताब इकामति स्सलवात हदीस नं ः 868)	حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيٰى : حَدَّثَنَا أَبُو حُذَيْفَةَ : حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ : أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ كَانَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَإِذَا رَكَعَ، وَإِذَا رَفَعَ [رَأْسَهُ] مِنَ الرُّكُوعِ فَعَلَ مِثْلَ ذٰلِكَ، وَيَقُولُ : رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَعَلَ مِثْلَ ذٰلِكَ، [إسناده حسن] * أبو الزبير صرح بالسماع عند السراج(ق٢٥/ ١)

रफउल यदैन और दस सहाबा ﷺ की गवाही

सय्यदना मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ﷺ बयान करते है कि ः

मैंने सय्यदना अबु हुमैद अस्साइदी ﷺ से सुना कि वो बयान करते है कि उन्होंने रसुलल्लाह ﷺ के दस सहाबा ﷺ की जमात में कहा , और उनमें हजरत अबु कतादा ﷺ भी थे कि मैं रसुलल्लाह ﷺ की नमाज के मुत्तालिक तुम सबसे ज्यादा बाखबर हूं | सहाबा ﷺ ने कहा ः कैसे ? अल्लाह की कसम ! तुम कोई हमसे ज्यादा नबी ﷺ की इत्तेबा करने वाले तो नहीं हो या हमारी निस्बत कदीमुल सोहबत तो नहीं हो | सहाबा ﷺ ने कहा ः अच्छा तो बयान करो |(अबु हुमैद ﷺ ने) कहा ः रसुलल्लाह ﷺ जब नमाज के लिए खड़े होते तो अपने दोनों हाथों को उठाते हत्ताकि वो आप ﷺ के कंधों के बराबर आ जाते, फिर "अल्लाहु अक्बर" कहते हत्ताकि हर हड्डी अपनी अपनी जगह पर ठिक तरह से टिक जाती फिर आप ﷺ किरआत फरमाते | फिर आप ﷺ "अल्लाहु अक्बर" कहते और अपने दोनों हाथों को उठाते हत्ताकि दोनों कंधों के बराबर आ जाते फिर रूकु करते और अपनी हथेलियों को गुटनों पर रखते और ऐतदाल व सुकून से रूकु करते, ना सर को झुकाते और ना ऊपर उठाते |फिर जब रूकु से सर उठाते तो "समिअल्लाहुलिमन हमिदह" कहते फिर अपने दोनों हाथों को उठाते हत्ताकि दोनों कंधों के बराबर आ जाते और खुब ऐतदाल व सुकून से खडे होते फिर"अल्लाहु अक्बर" कहते और जमीन की तरफ झूक जाते और (सज्दे में) अपने हाथ

– حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بنُ حَنْبَلٍ: حدثنا أَبُو عَاصِمٍ الضَّحَّاكُ بنُ مَخْلَدٍ؛ ح: وحدثنا مُسَدَّدٌ: حَدَّثَنَا يَحْيَى – وهذا حديثُ أَحْمَدَ – قال: أخبرنا عَبْدُ الْحَمِيدِ يَعْنِي ابنَ جَعْفَرٍ: أخبرني مُحَمَّدُ بنُ عَمْرِو ابنِ عَطَاءٍ قال: سَمِعْتُ أَبَا حُمَيْدٍ السَّاعِدِيَّ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَصْحَابِ رسولِ الله ﷺ مِنْهُمْ أَبُو قَتَادَةَ قال أَبُو حُمَيْدٍ: أَنَا أَعْلَمُكُم بِصَلَاةِ رسولِ الله ﷺ. قالُوا: فَلِمَ؟ فَوَاللهِ! مَا كُنْتَ بِأَكْثَرِنَا لَهُ تَبَعَةً، وَلَا أَقْدَمِنَا لَهُ صُحْبَةً. قال: بَلَى. قالُوا: فاعْرِضْ. قال: كَانَ رسولُ الله ﷺ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ، ثُمَّ كَبَّرَ حَتَّى يَقِرَّ كلُّ عَظْمٍ فِي مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلًا ثُمَّ يَقْرأُ، ثُمَّ يُكَبِّرُ فَيَرْفَعُ يَدَيْهِ حتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ، ثُمَّ يَرْكَعُ وَيَضَعُ رَاحَتَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ، ثُمَّ يَعْتَدِلُ فَلَا يَصُبُّ رأسَهُ وَلَا يُقْنِعُ، ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ فيقولُ: «سَمِعَ الله لِمَنْ حَمِدَهُ»، ثُمَّ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ مُعْتَدِلًا ثم يقولُ: «الله أَكْبَرُ»، ثُمَّ يَهْوِي إِلَى الأَرْضِ فَيُجَافِي يَدَيْهِ عن جَنْبَيْهِ،

अपने पहलु से दूर रखते | फिर अपना सर उठाते और अपना बाया पांव मोड लेते और उसके ऊपर बैठ जाते और सज्दे में अपनी पांव की उंगलियॉ (किब्ला रूख) मोड लेते, फिर (दूसरा) सज्दा करते, फिर "अल्लाहु अक्बर" कहकर अपना सर उठाते अपना बाया पांव मोडकर उसपर बैठ जाते हत्ताकि हर हड्डी अपनी अपनी जगह पर लौट आती | फिर अपनी दूसरी रकआत में भी ऐसेही करते | फिर जब दो रकआत से (तीसरी के लिए) उठते तो अपने हाथों को उठाते (यानी रफउल यदैन करते)| फिर बकिया नमाज इसीतरह करते हत्ताकि जब उस सज्दे में होते जिसमें सलाम कहना होता हो (तशहुद में) अपने बायें पांव को आगे कर देते और बायें सूरीन के हिस्सेपर बैठ जाते | तो उन सब सहाबा ﵃ की जमाअत ने कहा ः "तुमने सच कहा, रसुलल्लाह ﷺ भी ऐसेही नमाज़ पढा करते थे|"(सुनन अबु दाऊद किताबुस्सलात हदीस नं ः 730 सुनन तिर्मिजी हदीस नंः 304) (हदीस की तहकीक ः इस हदीस को सहीह कहा ः इमाम बुखारी ने(जुजउर्रफउल यदैन हदीस नं ः 102) में, इमाम तिर्मिजी ने (सुनन तिर्मिजी हदीस नं ः 304)में, इमाम इब्ने हिब्बान ने (सहीह इब्ने हिब्बान हदीस नं ः 1864)में, इमाम इब्ने खुजैमा ने (सहीह इब्ने खुजैमा हदीस नं ः 587)में, इमाम इब्ने तैमिय्या ने (मज्मुअल फतावा नं ः 22/453)में और इमाम इब्ने कय्यिम ने (तहजीब सुनन अबु दाऊद ः 2/416)में)

रफउल यदैन का सबुत खुल्फा ए राशीदीन رضي الله عنهم से

अमीरूल मोमीनीन सय्यदना अबु बकर सिद्दीक رضي الله عنه का अमल

अय्युब सखतयानी رحمه الله कहते है कि ः

उन्होनें ने सय्यदना अता बिन अबी रबाह رحمه الله (उस्ताद अबु हनीफा رحمه الله) ताबई को देखा कि उन्होंने नमाज शुरू करते वक्त, रूकु करते वक्त और रूकु से सर उठाते वक्त अपने दोनों हाथों को उठाया | मैंने पूछा तो उन्होने कहा कि मैंने सय्यदना अब्दुल्लाह बिन जुबैर رضي الله عنه सहाबी के पिछे नमाज पढी तो वो भी नमाज शुरू करते वक्त, रूकु करते वक्त और रूकु से सर उठाते वक्त अपने दोनों हाथों को उठाया करते थे | मैंने उनसे इस बारे में पूछा तो उन्होंने (सय्यदना इब्ने जुबैर رضي الله عنه ने) कहा कि ः मैंने सय्यदना अबु बकर सिद्दीक رضي الله عنه के पिछे नमाज पढ़ी तो वो भी नमाज शुरू करते वक्त, रूकु करते वक्त और रूकु से सर उठाते वक्त अपने दोनों हाथों को उठाया करते थे | सय्यदना अबु बकर सिद्दीक رضي الله عنه ने फरमाया कि मैंने रसुलल्लाह ﷺ के पिछे नमाज पढ़ी तो आप ﷺ भी नमाज शुरू करते वक्त, रूकु करते वक्त और रूकु से सर उठाते वक्त अपने दोनों हाथों को उठाया करते थे |

(सुनन कुबरा बहैकी ः 2/ 73)

(इस हदीस के तमाम रावी सिका (सहीह) है)

فَقَالَ أَيُّوبَ السَّخْتِيَانِيِّ رَأَيْتُ عَطَاءَ بْنَ أَبِي رَبَاحٍ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ، وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ، فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ: صَلَّيْتُ خَلْفَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ فَكَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ، وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ: صَلَّيْتُ خَلْفَ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَكَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ، وَإِذَا رَكَعَ، وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ، وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ صَلَّيْتُ خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَكَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا رَكَعَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ. رواته ثقات.

अमीरूल मोमीनीन सय्यदना उमर फारूक ؓ का अमल

लोग रसुलल्लाह ﷺ की मस्जिद में नमाज पढ़ रहे थे कि अचानक उनके पास सय्यदना उमर बिन खत्ताब ؓ आए और फरमाया ः लोगों ! अपने चेहरे मेरी तरफ करो मैं तुम्हें रसुलल्लाह ﷺ की नमाज पढ़कर दिखाता हूं जो आप ﷺ पढते थे और जिसका हुक्म देते थे | पस आप किबले की तरफ मूंह करके खडे हो गए और कंधों तक अपने दोनों हाथों को उठाया और “अल्लाहुअक्बर” कहा | फिर आपने अपनी नजर झुकाली फिर कंधों तक अपने दोनों हाथों को उठाया | फिर आपने तक्बीर कही और फिर रूकु किया | जब रूकु से खडे हुए तो इसीतरह अपने दोनों हाथों को उठाया |आपने लोगों से कहा कि रसुलल्लाह ﷺ हमें इसीतरह नमाज पढाते थे |(सुनन कुबरा बहैकी ः 2/ 23)

بَيْنَمَا النَّاسُ يُصَلُّوْنَ فِيْ مَسْجِدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ إِذْ خَرَجَ عَلَيْهِمْ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ ؓ فَقَالَ: أَقْبِلُوْا عَلَيَّ بِوُجُوْهِكُمْ أُصَلِّيْ بِكُمْ صَلٰوةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ الَّتِيْ كَانَ يُصَلِّيْ وَيَأْمُرُ بِهَا، فَقَامَ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتّٰى حَاذَا بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ، كَبَّرَ ثُمَّ غَضَّ بَصَرَهُ ، ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتّٰى حَاذَا بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ، ثُمَّ رَكَعَ وَكَذٰلِكَ حِيْنَ رَفَعَ قَالَ لِلْقَوْمِ هٰكَذَا كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ يُصَلِّيْ بِنَا

सय्यदना इब्ने उमर ؓ रफउल यदैन ना करने वालो को कंकरियों से मारते थे

सय्यदना नाफे ؒ कहते है कि ः

बेशक अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ जब किसी (जाहील नावाकिफ) आदमी को देखते कि वो रूकु से पहले और रूकु से उठकर रफउल यदैन नहीं करता तो उसे कंकरियों से मारते थे |(जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 15)
(इसे इमाम नववी ने मजमुआ शरहुल महजब जिल्द नं ः 3 सफा ः 405 में सहीह कहा)

حدثنا الحميدي: أنا الوليد ابن مسلم: قال سمعت زيد بن واقد يحدث عن نافع أن ابن عمر كان إذا رأى رجلاً لا يرفع يديه إذا ركع و إذا رفع رماه بالحصٰى.

रूकु से पहले और रूकु के बाद वाले रफउल यदैन को दर्जजैल सहाबा ﷺ ने रिवायत किया है

नं	सहाबा ﷺ के नाम	बहवाला
1.	सय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने उमर ﷺ	सहीह बुखारी ः 735,736,738 सहीह मुस्लिमः 390
2.	सय्यदना मालिक बिन हुवैरस ﷺ	सहीह बुखारी ः 737, सहीह मुस्लिम ः 391
3.	सय्यदना वाइल बिन हुज्र ﷺ	सहीह इब्ने खुजैमा ः 698, सहीह मुस्लिमः 401
4.	सय्यदना अबु हुमैद अस्साइदी ﷺ	सहीह इब्ने हिब्बान हदीस नं ः 1867
5.	सय्यदना अबु कतादा ﷺ	सहीह इब्ने हिब्बान हदीस नं ः 1873
6.	सय्यदना सहल बिन साअद ﷺ	सहीह इब्ने हिब्बान हदीस नं ः 1868
7.	सय्यदना अबु सईद ﷺ	सहीह इब्ने हिब्बान हदीस नं ः 1868
8.	सय्यदना मुहम्मद बिन मस्लमा ﷺ	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नंः 5
9.	सय्यदना अली बिन अबी तालिब ﷺ	सहीह इब्ने खुजैमा हदीस नं ः 584
10.	सय्यदना अबु मुसा अशअरी ﷺ	सुनन दारेकुतनी ः 1/292
11.	सय्यदना अब्दुल्लाह बिन जुबैर ﷺ	सुनन कुबरा बहैकी ः 2/73
12.	सय्यदना अबु बकर सिद्दीक ﷺ	सुनन कुबरा बहैकी ः 2/73
13.	सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ	मुस्नद अलसिराज सफा नं ः 62 हदीस नं ः 92
14.	सय्यदना अबु हुरैराह ﷺ	सहीह इब्ने खुजैमा हदीस नं ः 693
15.	सय्यदना अनस बिन मालिक ﷺ	मुस्नद अबी याला ः 2/424,245
16.	सय्यदना उमर बिन खत्ताब ﷺ	सुनन कुबरा बहैकी ः 2/23

रफउल यदैन का सबुत ताबई رحمه الله से

1. इकरमा बिन अम्मार से मर्वी आस़ार

इकरमा बिन अम्मार رحمه الله कहते है कि ः

मैंने सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर رحمه الله, अता رحمه الله, मक्हुल رحमه الله को देखा कि (शुरू) नमाज में रूकु करते वक्त और रूकु से सर उठाते वक्त अपने दोनों हाथों को उठाते थे | **(जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 62)**	عَنْ عِكْرَمَةَ بْنِ عَمَّارٍ قَالَ: رَأَيْتُ سَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللّٰهِ وَالْقَاسِمَ بْنَ مُحَمَّدٍ وَعَطَاءً اوَمَكْحُولاً يَرْفَعُوْنَ اَيْدِيَهِم فِى الصَّلَاة إِذَا رَكَعُوْا وإِذَا رَفَعُوْا ۰

2.रबीअ बिन सबीह से मर्वी आस़ार

रबीअ बिन सबीह رحمه الله कहते है कि ः

मैंने मुहम्मद बिन सीरीन رحمه الله, हसन बसरी رحمه الله, अबु नजराह رحمه الله, कासिम बिन मुहम्मद رحمه الله (अबु बकर सिद्दीक رضي الله عنه के पोते), अता बिन अबी रबाह رحمه الله,ताऊस बिन किसान رحمه الله, मुजाहीद رحمه الله, हसन बिन मुस्लिम رحمه الله, नाफे رحمه الله (इमाम मालिक के उस्ताद) और अब्दुल्लाह बिन नजीह رحمه الله को देखा जब नमाज शुरू करते और जब रूकु करते और जब रूकु से सर उठाते तो अपनें दोनों हाथों को उठाते थे | **(जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 67)**	عَنِ الرَّبِيْعِ بْنِ صَبِيْح قَالَ: رَأَيْتُ مُحَمَّدًا وَالْحَسَنَ وَاَبَا نَضْرَةَ وَالْقَاسِمَ بْنَ مُحَمَّدٍ وَعَطَاءً وَطَاؤُسًا وَمُجَاهِدًا وَالْحَسَنَ بْنَ مُسْلِمٍ وَنَافِعًا وَابْنَ اَبِى نَجِيْحٍ إِذَا افْتَحُوْا الصَّلٰوةَ رَفَعُوْا اَيْدِيْهِمْ وَإِذَا رَكَعُوْا ، وَإِذَا رَفَعُوْا رَؤُوْسَهُمْ مِنَ الرَّكُوْعِ

रूकु से पहले और रूकु के बाद रफउल यदैन करने वाले ताबई

नं	ताबई के नाम	बहवाला
1.	सय्यदना नाफे	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 67
2.	सय्यदना सालिम बिन अब्दुल्लाह	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 62
3.	सय्यदना कासिम बिन मुहम्मद	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 67
4.	सय्यदना हसन बसरी	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 67
5.	सय्यदना मुहम्मद बिन सीरीन	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 67
6.	सय्यदना सईद बिन जुबैर	सुनन कुबरा बहैकी ः 2/75
7.	सय्यदना अता बिन अबी रबाह	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 62
8.	सय्यदना ताऊस बिन किसान	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 67
9.	सय्यदना मुजाहीद	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 67
10.	सय्यदना हसन बिन मुस्लिम	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 67
11.	सय्यदना उमर बिन अब्दुल अजीज	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 17
12.	सय्यदना अब्दुल्लाह बिन नजीह	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 67
13.	सय्यदना अबु नजर	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 67
14.	सय्यदना नोमान बिन अय्याश	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 59
15.	सय्यदना मक्हुल	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 62
16.	सय्यदना वहब बिन मुनिब्बह	मुसन्निफ अब्दुर्रज्जाक ः 2/69
17.	सय्यदना अब्दुल्लाह बिन दिनार	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 69
18.	सय्यदना कैस बिन साद	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 68

रूकु से पहले और रूकु के बाद रफउल यदैन करने वाले अइम्मा ए मुहद्दीसीनीन

नं	अइम्माए मुहद्दीसीन ﷫ के नाम	बहवाला
1.	इमाम मालिक बिन अनस ﷫	सुनन तिर्मिजी हदीस नं ः 257
2.	इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक ﷫	सुनन तिर्मिजी हदीस नं ः 257
3.	इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफई ﷫	किताबुल उम्म लिलशाफई ः 1/126
4.	इमाम अहमद बिन हम्बल ﷫	अलमनहजुल अहमद ः 1/109
5.	इमाम यहया बिन मईन ﷫	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 121
6.	इमाम सुफियान बिन ऊयैना ﷫	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 121
7.	इमाम अब्दुल्लाह बिन उस्मान ﷫	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 65
8.	इमाम इसहाक बिन राहविया ﷫	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 65
9.	इमाम यहया बिन सइद अलकत्तान ﷫	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 121
10.	इमाम यहया बिन यहया ﷫	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 65
11.	इमाम अली अलमदीनी ﷫	जुजूअर्रफयदैन लिलबुखारी सफा नं ः 112
12.	इमाम ईसा बिन मूसा ﷫	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 65
13.	इमाम मुहम्मद बिन सलाम ﷫	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 65
14.	इमाम अब्दुर्रहमान बिन महदी ﷫	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 121
15.	इमाम काअब बिन सइद ﷫	जुजउर्रफउल यदैन लिलबुखारी हदीस नं ः 65

रफउल यदैन के मुत्तालिक उल्मा ए उम्मत के अक्वाल

1. इमाम अहले सुन्नत मुहम्मद बिन इदरीस शाफई ﷺ ः

- इमाम अहले सुन्नत मुहम्मद बिन इदरीस शाफई ﷺ फरमाते है कि ः "जो शख्स रसुलल्लाह ﷺ की शुरू नमाज में, रूकु से पहले और रूकु के बाद रफउल यदैन वाली हदीस सुनले, उसके लिए हलाल नहीं कि वो उसपर अमल ना करे और सुन्नत की इक्तदाअ (पैरवी) को छोड़ दे |" (तबकातुश्शाफई कुबरा ः 1/242)
- इमाम शाफई ﷺ फरमाते है कि ः "रूकु से पहले और बाद रफउल यदैन न करने वाला सुन्नत का तर्क करने वाला है |"(एअलामल मुक्कीइन सफा ः 257)
- रबीअ ﷺ कहते है कि मैंने इमाम शाफई ﷺ से पूछा कि रफउल यदैन का क्या मआनी है ? तो उन्होंने फरमाया ः "अल्लाह तआला की तआज़ीम और सुन्नते नबवी ﷺ की इत्तेबा |" (किताबुल उम्म ः 1/91)

2. इमाम अहले सुन्नत अहमद बिन हम्बल ﷺ ः

- इमाम अबु दाऊद ﷺ लिखते है कि ः मैंने इमाम अहमद बिन हम्बल ﷺ को देखा है कि ः वो रूकु से पहले और रूकु के बाद में भी शुरू नमाज की तरह रफउल यदैन कानोंतक करते थे | और बाज अवकात शुरू नमाज वाले रफयदैन से जरा तक्सीर करके रफयदैन करते थे |और मैंने इमाम अहमद बिन हम्बल ﷺ को ये कहते हुए सुना जब उनसे कहा गया कि ः एक शख्स रफउल यदैन की नबी ﷺ की ये अहादीस सुनता है और फिर भी रफउल यदैन नहीं करता | क्या उसकी नमाज पूरी होती है ? तो आप (इमाम अहमद ﷺ) ने फरमाया ः "पूरी नमाज होने का तो मुझे मालुम नहीं है, हां! वो फिनफ्सी नुक्स वाली नमाज है |"(मसाईले इमाम अहमद रकम ः 234-235 सफा नं ः 50 और अलमनहजुल अहमद ः 1/109)

3. इमाम अली बिन अब्दुल्ला अलमदिनी ﷺ (इमाम बुखारी ﷺ के शैख) ः

- इमाम अली बिन अब्दुल्ला अलमदिनी ﷺ(सिका इमाम) ने रफउल यदैन की एक हदीस के बाद कहा ः "इस हदीस के बिना पर मुसलमानों पर ये लाजिम है कि वो (नमाज में) रफउल यदैन करें | (फत्हुलबारी सफा नं ः 175)"

4. इमामुल मुहद्दीसीनीन मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी ﷫ ः

- इमाम बुखारी ﷫ लिखते है कि ः अइम्माए दिन में से किसी के पास भी नबी ﷺ से तर्के रफउल यदैन की कोई दलील नहीं है | इसीतरह किसी एक सहाबी ﷜ से भी रफयदैन ना करना साबित नहीं है | (जुजउर्रफउल यदैन तहत हदीस नं ः 40)
- इमाम बुखारी ﷫ फरमाते है कि ः "जो शख्स ये गुमान रखता है रफउल यदैन बिदत है तो उसने यकिनन नबी ﷺ के सहाबा ﷡, सलफ सॉलीहीन और उन के बाद आने वाले अहले हिज़ाज़, अहले मदीना, अहले मक्का, अहले इराक के बड़ी ताअदाद, अहले शाम, अहले यमन और अहले खरासान उनमें अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक इन सब पर तआन किया (यानी गाली दी)|" (जुजउर्रफउल यदैन तहत हदीस नं ः 75)

5. इमाम इब्ने खुजैमा ﷫ ः

- इमाम इब्ने खुजैमा ﷫ सय्यदना अबु हुमैद अस्साइदी ﷜ की रफउल यदैन वाली हदीस को रिवायत करने के बाद फरमाते है कि मैंने मुहम्मद बिन यह्या ﷫ को ये कहते सुना कि "जो शख्स हदीसए अबु हुमैद ﷜ सुनने के बावजुद रूकु में जाते वक्त और रूकु से सर उठाते वक्त रफउलयदैन नहीं करता तो उसकी नमाज नाकीस होगी |"
(सहीह इब्ने खुजैमा ः 1/198)

6. इमाम इब्ने कय्यिम ﷫ फरमाते है कि ः "जो शख्स रूकु को जाते हुए और रूकु से सर उठाते हुए रफउल यदैन न करे वो शख्स सुन्नते रसुल ﷺ का तारीक (छोड़ने वाला) है | (एअलामल मुकिईन ः 1/523)

7. इमाम शैख अब्दुल कादीर जीलानी ﷫ फरमाते है कि ः "नमाज़ में तक्बीरे तहरीमा के वक्त और रूकु में जाते वक्त और रूकु से सर उठाते वक्त रफउल यदैन करना चाहीए |" (गुनियतु त़्तोलिबीन सफा ः 7)

4.कियाम में सीने पर हाथों को रखना

हदीस़ नं ः 1

सय्यदना सह्ल बिन सअद ﷺ फरमाते है कि ः

लोगों को (रसुलुल्लाहﷺ की तरफ से) हुक्म दिया था कि आदमी नमाज में अपना दाया हाथ अपने बाए हाथ की जिराअ पर रखे | (सहीह बुखारी ः किताबुल अज़ान बाब ः नमाज में दाहिनें हाथ कों बायें हाथ पर रखना हदीस नं ः 740)	حَدَّثَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ كَانَ النَّاسُ يُؤْمَرُوْنَ أَنْ يَضَعَ الرَّجُلُ الْيَدَ الْيُمْنٰى عَلٰى ذِرَاعِهِ الْيُسْرٰى فِي الصَّلَاةِ . (صحح البخارى كتاب الاذان رقم حديث : 740)

तश्रीहुल हदीस नं ः 1

- अरबी जबान की मशहूर लूगत (डिक्शनरी)में लिखा है कि ः "जिराअ" ः यानी "कुहनी से लेकर बीच के ऊंगली तक का हिस्सा |"(अल मुन्जद सफा नं ः 262)
- इस हदीस से सीने पर हाथ बांधना साबित होता है | क्योंकि जब दाया हाथ बायें जिराअ पर होगा तो इस सूरत में हाथ नाफ के निचे नहीं जा सकेगा इसतरह बांधकर देखना चाहिए और तजूर्बा करना चाहिए तो सारी बात वाजेह हो जाएगी |

हदीस़ नं ः 2

सय्यदना वाईल बिन हुज्र رضي الله عنه कहते है कि ः

मैं आज आप ﷺ की नमाज जरूर देखुंगा कि (आप ﷺ) किस तरह नमाज पढ़ते है। फिर मैंने देखा कि फिर आप ﷺ खड़े हुए फिर अल्लाहुअक्बर कहा और अपने दोनों हाथों को कानों तक उठाया फिर आपने अपना दाया हाथ बायें हथेली , कलाई और (साअद) बाजू पर रखा। (सुनन नसाई किताबुल इफ्तेताह बाब ः नमाज में दाहिनें हाथ कों बायें हाथ पर रखना हदीस नं ः 890)	أَخْبَرَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ زَائِدَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي أَنَّ وَائِلَ ابْنَ حُجْرٍ أَخْبَرَهُ قَالَ: قُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى صَلَاةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ كَيْفَ يُصَلِّي؟ فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ فَقَامَ فَكَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى حَاذَتَا بِأُذُنَيْهِ، ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى كَفِّهِ الْيُسْرَى وَالرُّسْغِ وَالسَّاعِدِ،

तश्रीहुल हदीस नं ः 2

- इस हदीस को इमाम इब्ने खुजैमा رحمه الله ने अपनी किताब "सहीह इब्ने खुजैमा (जिल्द ः 1 हदीस नं ः 480)" में और इमाम इब्ने हिब्बान رحمه الله ने "सहीह इब्ने हिब्बान (जिल्द ः 3 हदीस नं ः 1857)" में जिक्र किया है।
- असल में ये हदीस जिराअ की तश्रीह है अरबी लूगत की मशहूर किताब अल मुअजमूल वूसैत जिल्द ः 1 सफा नं ः 430 में हैं कि ः "الساعد : مابين المرفق والكف من أعلى" साअद कुहनी और हथेली के दरम्यान ऊपर की तरफ को कहते है।

हदीस नं ः 3

सय्यदना वाईल बिन हुज رضي الله عنه कहते है कि ः

मैंने नबी ﷺ के साथ नमाज अदा की, आप ﷺ ने अपने दाया हाथ को अपने बाए हाथ पर सीने रखा। (सहीह इब्ने खुजैमा किताबुससलात हदीस नं ः479 इसे इमाम इब्ने खुजैमा ने सहीह कहा है)	اَخْبَرَنَا اَبُوْطَاهِرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اَبُوْبَكْرٍ نَا اَبُوْمُوْسٰى نَامُؤَمَّلٌ نَاسُفْيَانُ عَنْ عَاصِمِ بْنِ كُلَيْبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ صَلَّيْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنٰى عَلٰى يَدِهِ الْيُسْرٰى عَلٰى صَدْرِهٖ (صحيح ابن خزيمة كتاب الصلاة رقم :479)

तश्रीहुल हदीस नं ः 3

- इमाम इब्ने खुजैमा ने अपनी सहीह के मुत्तालिक किताब के शुरू में अपनी शर्त इस तरह जिक्र करते है ः "ये मुख्तसर अहादीस का मज्मुआ है जो रसुलुल्लाह ﷺ तक सहीह और मुत्सल सनद के साथ पहुंचता है और दरम्यान में कोई रावी साकित या सनद में इन्कताअ नहीं हैं और ना तो रावीयों में कोई रावी मज्रूअ या जईफ है |"
- इससे साबित हुआ कि इस किताब के तमाम अहादीस इमाम इब्ने खुजैमा के नजदीक सहीह है | जब कोई मुहद्दीस अपनी किताब के शुरू में ये शर्त बयान करें कि किताब के तमाम रिवायात सहीह और मुत्सल है तो लेहाजा हर रिवायत उनके नजदीक सहीह होती है और उन्हें हर हदीस पर सहीह का हुक्म लगाना जरूरी नहीं है |
- सनद का जायजा ः बाज लोग इस हदीस के रावी मुअम्मल बिन इस्माईल पर जराह नकल करते है लेकिन ये रावी मुहद्दीसीनीन के अक्सरीयत के नजदीक सिका (सहीह) और हसनुल हदीस रावी है | इनकी ताअदील (तौसिक) दर्ज जैल मुहद्दीसीनीन की है ः

1. इमाम यहया इब्ने मईन ने कहा ः "ثقة" सिका (सहीह)(तारीख इब्ने मईन सफा ः 235)
2. इमाम दारे कतनी ः "صحح له في سننه"ने उन्हें अपनी किताब सुनन दारे कतनी में सहीह कहा |(सुनन दारेकतनी ः 2/186 हदीस नं ः 2261)
3. इमाम इब्ने हिब्बान : "ذكره في الثقات" उन्हें सिकात में जिक्र किया है | (स्सिकात :9/187)
4. इमाम इब्ने शाहिन :"ذكره في كتب الثقات" ने उन्हें सिकात में जिक्र किया है | (स्सिकात ः 1416)
5. इमाम तिर्मिजी: "صحح له في سننه"ने उन्हें अपनी किताब सुनन तिर्मिजी में सहीह कहा | (सुनन तिर्मिजी ः किताबुस्सियाम हदीस नं ः 672)
6. इमाम इब्ने खुजैमा :"أخرج عنه ، في صحيحه" ने उन्हें अपनी किताब सहीह इब्ने खुजैमा में सहीह कहा | (सहीह इब्ने खुजैमा किताबुस्सलात हदीस नं ः 479)
7. इमाम बुखारी ः "أخرج عنه تعليقاً في صحيحه" ने मुअम्मल बिन इस्माईल से अपनी सहीह बुखारी में तालीकन रिवायत ली है लेहाजा वो उन के नजदीक सहीहुल हदीस (सिका व सदूक) रावी है |(सहीह बुखारीः किताबुल फितन हदीस नं ः 7083 और किताबुस्सुलह हदीस नं ः 2700)

- नोट ः इमाम बुखारी की मुअम्मल बिन इस्माईल पर जरह सनदन साबित नहीं हैं |

हदीस़ नं ः 4

सय्यदना कबिसा बिन हुल्ब ताबई ﷫ अपने वालिद हुल्ब ﷛ से रिवायत करते है कि ः

मैं ने अल्लाह के रसूल ﷺ को अपने दाएं और बाएं पलटते हुए देखा, और मैंने आप ﷺ को इसे(यानी हाथ को) सीने पर रखते हुए देखा| और यह़्या ने(हाथ रखने की) कैफियत बयान की कि दाहीने हाथ को बाएं (हाथ) के जोड पर रखा| (मुस्नद अहमद जिल्द नं ः 5 सफा नं ः 226 इसे हाफीज इब्ने अब्दुल बर ﷫ और अल्लामा अजीमाबादी ﷫ ने सहीह कहा है)	حَدَّثَنَا عَبْدُاللهِ حَدَّثَنِى اَبِى حَدَّثَنَا يَحْيٰ بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ سُفْيَانَ حَدَّثَنِى سِمَاكٌ عَنْ قُبَيْصَةَ بِنْ هُلْبٍ عَنْ اَبِيْهِ قَالَ رَائَيْتُ النَّبِىَّ ﷺ يَنْصَرِفُ عَنْ يَمِيْنِه وَ عَنْ يَسَارِه وَرَأَيْتُه قَالَ يَضَعُ هَذِهِ عَلٰى صَدْرِه وَوَصَفَ يَحْيٰ الْيُمْنىٰ عَلٰى الْيُسْرىٰ فَوْقَ الْمِفْصَلِ (مسند احمد : ج ٨ ص ٢٢٥)

तश्रीहुल हदीस नं ः4

- इस हदीस को हाफीज इब्ने हजर अस्कलानी ﷫ ने फत्हुल बारी शरह सहीह बुखारी में "नमाज में दाहिनें हाथ कों बायें हाथ पर रखना" इस बाब के हदीस के तहत जिक्र किया है |
- सेहते हदीस ः इस हदीस को अल्लामा इब्ने सय्यिदीन्नास ﷫ ने शरह तिर्मिजी में सहीह कहा| अल्लामा अब्दुर्रहमान मूबारकपूरी ﷫ शरह जामे तिर्मिजी में लिखते है कि ः "इस हदीस के तमाम रावी सिका(सहीह) व मोतबर है और सनद मुत्सल है |"

हदीस नं ः 5

इमाम अबू दाऊद رحمه الله फरमाते हैं ः

हम से अबू तौबा ने हदीस बयान की, हम से अल हैसम यानी इब्ने हुमैद ने हदीस बयान किया उन्होंने सौरी से रिवायत किया और उन्होंने सुलैमान बिन मूसा से और वो ताऊस رحمه الله से रिवायत करते हैं कि उन्होंने(ताऊस ने) फरमाया: “अल्लाह के रसूल ﷺ अपना दाया हाथ अपने बाए हाथ के उपर रखते फिर दोनों को नमाज़ में अपने सीने पर बांधते |” (सुनन अबू दाऊद ः 687 मरासिले अबु दाऊद ः 33)	حَدَّثَنَا أَبُو تَوْبَةَ: حدثنا الْهَيْثَمُ يَعْنِي ابْنَ حُمَيْدٍ، عن ثَوْرٍ، عن سُلَيْمَانَ بنِ مُوسَى، عن طَاوُسٍ قال: كَانَ رسولُ الله ﷺ يَضَعُ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى يَدِهِ الْيُسْرَى ثُمَّ يَشُدُّ بَيْنَهُمَا عَلَى صَدْرِهِ وَهُوَ فِي الصَّلَاةِ. (سنن ابی داؤد رقم:687)

तश्रीहुल हदीस नं ः 5

- सनद की तहकीक ः सुलैमान बिन मूसा رحمه الله

  1. इमाम यहया इब्ने मईन رحمه الله ने कहा ः सिका (सहीह) है |
  (तारीख उस्मान बिन सईद अद्दारमी ः 26,360)

  2. इमाम इब्ने हिब्बान رحمه الله ने उन्हें सिकात में जिक्र किया है | (किताबुस्सिकात ः 1/379-380)

  3. ये मुक्दमा सहीह मुस्लिम के रावी है |

- इस रिवायत की सनद ताऊस तक हसन है और ये रिवायत मूरसल है | अगरचे अहले हदीस के नजदीक मूरसल रिवायत जईफ होती है मगर इस रिवायत को दो वजह से पेश किया गया है ः

1. हनफी देवबंदी व बरेल्वी के नजदीक मूरसल रिवायत हुज्जत होती हैं |

- अल्लमा ऐनी हनफी رحمه الله फरमाते है कि ः المرسل حجة عندنا “मुर्सल हमारे नज़दीक हुज्जत है |”
  (उमदतुल कारी: अल इल्म: बाबु किताबिल इल्म)

2. ये रिवायत हुल्ब अत्ताई رضي الله عنه की हसन रिवायत की शाहीद है जो पहले गुजर चूकी है |

सीने पर हाथ बांधने के क़ाइलीन उलमा

मौलाना अब्दुल हैय्य लखनवी ﷫ फरमाते हैं ः	
इब्ने खुज़ैमा ﷫ और उन के अलवा दूसरे (उलमा) के नज़दीक वाइल ﷜ की ह़दीस से सीने पर हाथ रखना साबित है, और इमाम शाफई ﷫ और उन के अलावा दूसरे उलमा का भी यही क़ौल है | (अत्तालीकुल मुमज्जद ः अबवाबुस्सलाह ः 290)	وثبت عند ابن خزيمة وغيرهِ من حديث وائل الوضع على الصدر وبه قال الشافعي وغيره [التعليق الممجّد: أبواب الصلاة رقم 290]
इमाम हाफीज इब्ने कय्यिम ﷫ लिखते है कि ः	
रसुलुल्लाह ﷺ तक्बीर के बाद अपने दायें हाथ से बायें हाथ को पकड़ कर उसको कलाई पर रख कर सीने पर रखते थे | (किताबुसल्लात सफा नं ः 399-400)	ثم كان يمسك شماله بيمينه ويضعها عليها فوق المفصل ثم يضعهما على صدره.(كتاب الصلاة رقم:399-400)

जरूरी नोट

- सुनन अबु दाऊद में सय्यदना अली ﷜ और अबु हुरैराह ﷜ से नाफ के नीचे हाथ बांधने की जो रिवायात पेश की जाती, वो तमाम रिवायात जमहुर मुहद्दीसीनीन के नजदीक जईफ है |
- उन रिवायात के मर्कजी रावी **“अब्दुर्रहमान बिन इसहाक अल कूफी”** के बारे में
  1.इमाम अहमद बिन हम्बल ﷫ ने कहा ः “मुन्करूल हदीस”(किताबुज्जईफा अल बुखारी ः 203)
  2.इमाम बुखारी ﷫ कहते है ः “जईफुल हदीस” (अल इलल अत्तिर्मिजी ः 1/227)
  3.हाफिज इब्ने हजर ﷫ ने कहा ः “जईफ कूफी” (तकरीबत्तहजीब ः 3823)
  4.मौलाना अब्दुल ह़य्यी लखनवी हनफी ﷫ हिदाया के ह़ाशिये में फरमाते हैं: “ ان من السنة” वाली ह़दीस ज़ईफ है, उस के ज़ोअफ पर तमाम(मुह़द्दिसीन) का इत्तिफाक़ है इसी तरह़ इमाम नववी ﷫ ने कहा है | (ह़ाशिया अल हिदाया जिल्द नं ः1 सफा ः102)
- अगर हनफिया के नजदीक नाफ के नीचे हाथ बांधना सुन्नत से साबित है तो औरतों को क्यों कर सीने पर हाथ बांधने का हुक्म दिया जाता है ? क्या औरतों के लिए अलाहीदा हुक्म सुन्नत से साबित है ?

5.इमाम के पीछे सुरह फातेहा पढना

- नमाज में सुरह फातेहा पढना हर नमाजी पर वाजीब है,ख्वाह वो इमाम हो या मुक्तदी,मुकीम हो या मुसाफिर,नमाज सिर्री हो या जहरी |(सहीह बुखारी ः किताबुल अज़ान बाब नं ः 394)

1. सुरतुल फातेहा के बगैर नमाज नहीं होती

हदीस नं ः 1

सय्यदना उबादा बिन सामित ﷺ फरमाते हैं कि ः

रसुलल्लाह ﷺ ने फरमाया ः "जिस शख्स ने (नमाज में) सुरह फातेहा ना पढी उसकी कोई नमाज नहीं हुई |" (सहीह बुखारी किताबुल अज़ान बाब ः नमाज़ में सुरह फातेहा पढना हर नमाजी पर वाजीब है,ख्वाह वो इमाम हो या मुक्तदी,मुकीम हो या मुसाफिर,नमाज़ सिर्री हो या ज़हरी हदीस नं ः 735 , सहीह मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस ः 390)	عَنْ عُبَادَةَ بْنِ/ الصَّامِتِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لا صَلاةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ»

हदीस नं ः 2

सय्यदना अबु हुरैराह ﷺ फरमाते हैं कि ः

रसुलल्लाह ﷺ ने फरमाया ः " जिस शख्स ने नमाज़ पढ़ी और उसमें सुरह फातेहा ना पढ़ी,पस !वो (नमाज़) नाकीस है, नाकीस है, पुरी नहीं	(सहीह मुस्लिम किताबुस्सलात हदीस ः 395)	عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «مَنْ صَلَّى صَلَاةً لَمْ يَقْرَأْ فِيهَا بِأُمِّ الْقُرْآنِ فَهِيَ خِدَاجٌ» ثَلَاثًا، غَيْرُ تَمَامٍ.

इमाम के पीछे मुक्तदी का हर(जहरी सिर्री) नमाज में किरआत करना

हदीस़ नं ः 3

सय्यदना अनस बिन मालिक ﷺ फरमाते हैं कि ः

**रसुलल्लाह ﷺ ने अपने सहाबा ﷺ को नमाज़ पढाई	फारिग होकर उनकी तरफ मुतवज़्ज़ह होकर पूछा ः क्या तुम अपनी नमाज़ में इमाम के किरआत के दरम्यान में पढ़ते हो ? सब खामोश रहे,तीन बार आप ﷺ ने उनसे पूछा,तो उन्होंने जवाब दिया ः हां ! हम ऐसा करते है	आप ﷺ ने फरमाया ः " ऐसा न करो तुम सिर्फ सुरह फातेहा दिल में पढ़ लिया करो |"** (जुजऊल किरआत लिलबुखारी हदीस नं ः 255 व सहीह इब्ने हिब्बान हदीस नं ः 1841)	حَدَّثَنَا مَحْمُوْدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا الْبُخَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يُوْسُفَ قَالَ: أَنْبَأَنَا عُبَيْدُ اللّٰهِ عَنْ أَيُّوْبَ عَنْ أَبِيْ قِلَابَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلّٰى بِأَصْحَابِهِ فَلَمَّا قَضٰى صَلَاتَهُ أَقْبَلَ عَلَيْهِمْ بِوَجْهِهِ فَقَالَ: ((أَتَقْرَءُوْنَ فِيْ صَلَاتِكُمْ وَالْإِمَامُ يَقْرَأُ؟)) فَسَكَتُوْا فَقَالَهَا ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ، فَقَالَ قَائِلٌ أَوْ قَائِلُوْنَ: إِنَّا لَنَفْعَلُ قَالَ: ((فَلَا تَفْعَلُوْا وَلْيَقْرَأْ أَحَدُكُمْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ فِيْ نَفْسِهِ.))

- **ये हदीस मुस्नद अबी यअला (हदीस नं ः 2805), सहीह इब्ने हिब्बान (हदीस नं ः1839) , सुनन कुबरा बहैकी (जिल्द ः2 सफा ः 122) , किताबुल किरआत बहैकी (हदीस नं ः 140)और अलअवसत अत्तबरानी (बहवाला मज्मुअल जवाईद ः 2/110) में बहुत से सनदों के साथ उबैदुल्लाह बिन अम्रव ﷺ से मरवी है |**

- हाफीज हैसमी رحمه الله इस हदीस के बारे में फरमाते है कि ः इसे अबी यअला ने (मुस्नद में) और तबरानी ने अवसत में रिवायत किया है और इसके तमाम रावी सिका (सहीह) है | (मज्मुअल जवाईद ः 2/110)
- इस हदीस के तमाम रावी सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम के रावी है | मसलन देखिए सहीह बुखारी (किताबुल अजान हदीस नं ः 605, किताबुल फाजाईले मदीना हदीस नं ः 1869, किताबुल जिहाद व सैर हदीस नं ः 2886)
- ये रिवायत महफूज है |(देखिए अल एहसान बितरतिब सहीह इब्ने हिब्बान हदीस नं ः 1849 व जौहरन्नकी ः 2/166-167)

रावी हदीस ः अनस बिन मालिक رضي الله عنه का अमल

सय्यदना साबित رحمه الله (ताबई) फरमाते है कि ः

“अनस (बिन मालिक) رضي الله عنه हमें इमाम के पीछे किरआत (सुरह फातेहा) का हुक्म देते थे और मैं अनस رضي الله عنه के साथ (इमाम के पीछे नमाज़ में) खड़ा होता , आप رضي الله عنه सुरह फातेहा और मुफसल में से कोई सुरत पढ़ते थे ,और अपनी किरआत हमें सुनाते थे ताकि हम उनसे (ये तरीका) ले ले |(किताबुल किरआत बहैकी हदीस नं ः 231 सुनन कुबरा बहैकी ः 2/170) (सनदहु हसन ः कवाकिबु दुर्रिय्या सफा ः 26)	” أخبرنا أبو عبدالله الحافظ: حدثني محمد بن يعقوب: أنا محمد ابن إسحاق: نا أحمد بن سعيد الدارمي، ثنا النضر يعني ابن شميل ثنا العوام وهو ابن حمزة عن ثابت عن أنس قال: كان يأمرنا بالقراءة خلف الإمام قال: وكنت أقوم إلى جنب أنس فيقرأ بفاتحة الكتاب وسورة من المفصل ويسمعنا قراءته لنأخذ عنه “ (كتاب القراءت: ص١٠١ ح٢٣١، السنن الكبرى: ٢/١٧٠ مختصراً)

हदीस नं ः 4

सय्यदना उबादा बिन सामित ﵁ ने फरमाया ः

"हमें अल्लाह के रसूल ﷺ ने वो नमाज़ पढ़ाई जिस में किरआत बिलज़हर की जाती है, आप ﷺ ने हमें फरमाया ः जब मैं जहर (आवाज) के साथ किरआत कर रहां हूं तो तुम में से कोई सुरह फातेहा के अलावा और कूछ ना पढ़े |" (सुनन नसाई ः किताबुस्सलात हदीस नं ः 921)	أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ عَمَّارٍ عَنْ صَدَقَةَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَاقِدٍ، عَنْ حَرَامِ بْنِ حَكِيمٍ، عَنْ نَافِعِ بْنِ مَحْمُودِ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ بَعْضَ الصَّلَوَاتِ الَّتِي يُجْهَرُ فِيهَا بِالْقِرَاءَةِ فَقَالَ: «لَا يَقْرَأَنَّ أَحَدٌ مِنْكُمْ إِذَا جَهَرْتُ بِالْقِرَاءَةِ إِلَّا بِأُمِّ الْقُرْآنِ».

तश्रीहुल हदीस नं ः 4

- इस हदीस के बारे में इमाम बहैकी ﵀ ने कहा ः इस हदीस की सनद सहीह है और इसके तमाम रावी सिका(सहीह) है |(किताबुल किरआत हदीस नं ः121)और इमाम दारेकतनी ﵀ फरमाते है कि ः इसकी सनद हसन है और इसके तमाम रावी सिका (सहीह) है |
(सुनन दारेकतनी हदीस नं ः 1207)
- इसीतरह उबादा बिन सामित ﵁ की रिवायत सुनन अबु दाऊद में इस तरह मौजूद है ः सय्यदना उबादा बिन सामित ﵁ ने फरमाया ः "हम अल्लाह के रसूल ﷺ के पीछे फज्र की नमाज़ पढ रहे थे, अल्लाह के रसूल ﷺ ने किरात की तो आप ﷺ पर किरात भारी हो गई | जब आप ﷺ फारिग़ हुए तो फरमाया ः "शायद तुम इमाम के पीछे किरात करते हो?" हम ने कहा ः "हां , ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ |" आप ﷺ ने फरमाया ः "तुम सूरह फातिह़ा के अलावा कुछ ना पढा करो, इस लिए कि उस शख्स की नमाज़ ही नहीं जिस ने सूरह फातिह़ा ना पढी |"(सुनन अबु दाऊद ः किताबुस्सलात हदीस नं ः 823 सुनन तिर्मिजी ः किताबुस्सलात हदीस ः 311)
- हदीस की तहकीक ः इस हदीस को सहीह कहा ः इमाम इब्ने खुजैमा ﵀ ने (सहीह इब्ने खुजैमा ः 3/36) में, इमाम इब्ने हिब्बान ﵀ ने (सहीह इब्ने हिब्बान हदीस नं ः 1782,1845) में, इमाम बहैकी ﵀ ने (सुनन कुबरा बहैकी ः2/164) में | और हसन कहा ः इमाम तिर्मिजी ﵀ ने (सुनन तिर्मिजी हदीस नं ः 311) में, इमाम दारे कतनी ﵀ ने (सुनन दारे कतनी हदीस नं ः 1200) में |

रावी हदीस ः उबादा बिन सामित ﷺ का अमल

सय्यदना महमुद बिन रबीअ ﷺ फरमाते है कि ः

मैंने इमाम के पीछे एक नमाज पढ़ी और मेरे साथ उबादा बिन सामित ﷺ खड़े थे |उन्होंने सुरतुल फातेहा पढ़ी | मैंने उनसे पूछा ः "ऐ अबु वलीद ﷺ क्या मैंने आपको सुरह फातेहा पढ़ते हुए नहीं सुना ? तो उन्होंने फरमाया ः जी हां इस (सुरह फातेहा) के बगैर नमाज नहीं होती |"(मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा ः1/375 हदीस नं ः 3770 सनद सहीह ः इस हदीस के तमाम रावी सहीह मुस्लिम के रावी है) सय्यदना उबादा बिन सामित ﷺ जहरी नमाज में भी इमाम के पीछे सुरह फातेहा पढ़ते थे | (सुनन अबु दाऊद किताबुस्सलात हदीस नं ः 824 इस हदीस को इमाम बहैकी ने किताबुल किरआत सफा ः 50-51 में सहीह कहा और इमाम दारे कतनी ने अपनी सुनन हदीस नं ः1207 में हसन कहा)	حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ ابن عَوْنٍ، عَنْ رَجَاءِ بْنِ حَيْوَةَ، عَنْ مَحْمُودِ بْنِ رَبِيعٍ، قَالَ: صَلَّيْت صَلاَةً وَإِلَىٰ جَنْبِي عُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ، قَالَ: فَقَرَأَ بِفَاتِحَةِ الكِتَابِ، قَالَ: فَقُلْت لَهُ: يَا أَبَا الوَلِيدِ أَلَمْ أَسْمَعْك تَقْرَأُ بِفَاتِحَةِ الكِتَابِ؟ قَالَ: أَجَلْ، إِنَّهُ لاَ صَلاَةَ إِلاَّ بِهَا .

रावी हदीस ः सय्यदना अबु हुरैराह ﷠ का हुक्म

सय्यदना अबु हुरैराह ﷠ फरमाते हैं ः

रसुलल्लाह ﷺ ने फरमायाः " जिस शख्स ने नमाज पढी और उसमें सुरह फातेहा न पढी,पस वो (नमाज़) नाकीस है, नाकीस है, पुरी नहीं | यें जुमला आप ﷺ ने तीन बार इर्शाद फरमाया | लोगों ने अबु हुरैराह ﷠ से पूछा कि जब हम इमाम के पीछे हो तो क्या करे ? अबु हुरैराह ﷠ ने फरमाया ः "इसे अपने नफ्स में पढ़ लिया करे |" (सहीह मुस्लिम ःकिताबुस्सलात हदीस नं ः 311)	عَنْ أبي هُرَيْرَةَ، عَنِ النبي ﷺ قال: «مَنْ صَلَّى صَلاةً لَمْ يَقْرَأْ فِيهَا بِأُمِّ القُرْآنِ فَهِيَ خِدَاجٌ»(١). ثَلاثاً، غَيْرُ تَمَامٍ، فَقِيلَ لأبي هُرَيْرَةَ: إِنَّا نَكُونُ وَرَاءَ الإمَامِ، فَقَالَ: اقْرَأْ بِهَا فِي نَفْسِكَ،

अमीरूल मोमीनीन सय्यदना उमर ﷠ का हुक्म

सय्यदना यजिद बिन शरीक ﷫ कहते है कि ः

"मैंने उमर बिन खत्ताब ﷠ से पूछा कि क्या मैं इमाम के पीछे किरआत करूं ? उन्होंने फरमाया ः हां, मैंने कहा ः ऐ अमीरूल मोमीनीन ! अगर आप किरआत कर रहे है तो? तो आप (उमर ﷠) ने फरमाया ः अगर मैं किरआत कर रहा हुं तब भी पढ़ं |" (जुजउल किरअत लिल बुखारी हदीस नं ः 51 व सुनन बहैकी ः2/167 मुसन्निफ अब्दुरर्ज्जाक ः 2/131 हाकीम ः 1/239 दारेकतनी ः1 /317 हदीस की तहकिक ः इस हदीस को इमाम हाकीम, दारेकतनी और जहबी ने सहीह कहा) मुस्तदरक हाकिम में ये सराहत मौजुद है कि उमर ﷠ ने फरमाया ः اِقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ यानी सुरह फातेहा पढ, लेहाजा इस रिवायत में किरआत से मुराद सुरह फातेहा है |(अलकवाकिब दुर्रिय्या सफा ः 63-64)	. حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ: حَدَّثَنَا الْبُخَارِيُّ قَالَ: وَقَالَ لَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سُلَيْمَانَ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ جَوَابٍ التَّيْمِيِّ عَنْ يَزِيدَ بْنِ شَرِيكٍ قَالَ: سَأَلْتُ عُمَرَ ابْنَ الْخَطَّابِ: أَقْرَأُ خَلْفَ الْإِمَامِ؟ قَالَ: نَعَمْ، قُلْتُ: وَإِنْ قَرَأْتَ يَاأَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ؟ قَالَ: وَإِنْ قَرَأْتُ.

इमाम के पीछे सुरह फातेहा पढ़ने वाले सहाबा رضی اللہ عنہم

नं	सहाबा رضی اللہ عنہم के नाम	बहवाला
1.	सय्यदना उमर बिन खत्ताब رضی اللہ عنہ	(जुजउल किरआत लिल बुखारी हदीस नं : 51)
2.	सय्यदना अबु हुरैराह رضی اللہ عنہ	(जुजउल किरआत लिल बुखारी हदीस नं : 283)
3.	सय्यदना अबु सईद खुदरी رضی اللہ عنہ	(जुजउल किरआत लिल बुखारी हदीस नं : 11,105)
4.	सय्यदना उबादा बिन सामित رضی اللہ عنہ	(मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा :1/375 हदीस नं : 3770)
5.	सय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ	(मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा :1/375 हदीस नं : 3773)
6.	सय्यदना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ	(किताबुल किरआत बहैकी सफा : 101 हदीस नं:231)
7.	सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رضی اللہ عنہ	(जुजउल किरआत लिल बुखारी हदीस नं : 60)
8.	सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ	(सुनन इब्ने माजा हदीस नं : 843)
9.	सय्यदना अबी इब्ने काअब رضی اللہ عنہ	(जुजउल किरआत लिल बुखारी हदीस नं : 52)
10.	सय्यदना हिश्शाम बिन आमीर رضی اللہ عنہ	(किताबुल किरआत बहैकी सफा : 67)

इमाम के पीछे सुरह फातेहा पढ़ने वाले ताबई

1. सय्यदना सईद बिन जुबैर ﷺ ः सय्यदना सईद बिन जुबैर ﷺ से कहा गया कि ः क्या मैं इमाम के पीछे किरआत करूं ? तो उन्होंने कहा ः “हां अगरचे तु उसकी किरआत सुन रहा हो |”(जुजउल किरआत लिल बुखारी हदीस नं ः 273 सनद हसन ः कवाकिबु दुर्रिय्या सफा ः27)
2. सय्यदना हसन बसरी ﷺ ः सय्यदना हसन बसरी ﷺ ने कहाः “इमाम के पीछे हर नमाज में सुरह फातेहा अपने दिल में (सिर्रन्) पढं |”(किताबुल किरआत बहैकी सफा ः 105 हदीस नं ः 242 सनद सहीह ः कवाकिबु दुर्रिय्या सफा नं ः 27)
3. सय्यदना आमीर शाअबी ﷺ ः सय्यदना आमीर शाअबी ﷺ ने फरमाया ः “जोहर और असर में इमाम के पीछे सुरह फातेहा और (कोई) एक सुरत पढं और आखरी दो रकआत में (सिर्फ) सुरह फातेहा पढं |” (मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा ः1/374 हदीस नं ः 3764 सनद सहीह ः कवाकिबु दुर्रिय्या सफा नं ः 28)
4. सय्यदना उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उतबा ﷺ ः सय्यदना उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उतबा ﷺ इमाम के पीछे (किरआत) करते थे |
(मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा ः 1/373 हदीस नं ः 3750 सनद सहीह ः कवाकिबु दुर्रिय्या सफा नं ः 28)
5. सय्यदना हकम बिन उतैबा ﷺ ः सय्यदना हकम बिन उतैबा ﷺ ने फरमाया ः “जिस नमाज में इमाम बुलंद आवाज से नहीं पढ़ता उसकी पहली दों रकआतों में सुरह फातेहा और (कोई) एक सुरत पढं और आखरी दो रकआत में (सिर्फ) सुरह फातेहा पढं |”
(मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा ः1/374 हदीस नं ः 3766 सनद सहीह ः कवाकिबु दुर्रिय्या सफा नं ः 28)
6. सय्यदना उसामा बिन उमैर ﷺ ः सय्यदना उसामा बिन उमैर ﷺ इमाम के पीछे (सुरह फातेहा) पढ़ते थे | (मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा ः1/375 हदीस नं ः 3768 सनद सहीह ः कवाकिबु दुर्रिय्या सफा नं ः 28)

इमाम के पीछे सुरह फातेहा पढ़ने वाले ताबई

नं	ताबई ﷺ के नाम	बहवाला
1.	सय्यदना सईद बिन जुबैर رحمہ اللہ	(जुजउल किरआत लिल बुखारी हदीस नं ः 60)
2.	सय्यदना हसन बसरी رحمہ اللہ	(किताबुल किरआत इमाम बहैकी हदीस नं ः242)
3.	सय्यदना मुजाहीद رحمہ اللہ	(जुजउल किरआत लिल बुखारी हदीस नं ः 11)
4.	सय्यदना अमीर शाअबी رحمہ اللہ	(मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा ः1/374 हदीस नं ः 3764)
5.	सय्यदना उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उतबा رحمہ اللہ	(मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा ः1/373 हदीस नं ः 3750)
6.	सय्यदना हकम बिन उतैबा رحمہ اللہ	(किताबुल किरआत बहैकी सफाः101 हदीस नंः 231)
7.	सय्यदना उसामा बिन उमैर رحمہ اللہ	(मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा ः1/375 हदीस नं ः 3768)
8.	सय्यदना उरवा बिन जुबैर رحمہ اللہ	(मोत्ता इमाम मालिक ः1/85 हदीस नं ः 186)
9.	सय्यदना कासिम इब्ने मुहम्मद رحمہ اللہ	(मोत्ता इमाम मालिक ः1/85 हदीस नं ः 187)
10.	सय्यदना नाफे बिन जुबैर رحمہ اللہ	(मोत्ता इमाम मालिक ः1/85 हदीस नं ः 187)

इमाम के पीछे सुरह फातेहा पढ़ने वाले मुहद्दिसीनीन

1. इमाम बुखारी ؒ ः इमामुल मुहद्दीसीनीन मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी ؒ जहरी और सिर्री नमाज में इमाम के पीछे किरआत के कायल थे जिस पर उन्होंने “जुजउल किरआत” ये किताब लिखी और सहीह बुखारी में हदीस पर ये बाब लिखा ः “नमाज में किरआत (सुरह फातेहा) पढना हर नमाजी पर वाजीब है, ख्वाह वो इमाम हो या मुक्तदी, मुकीम हो या मुसाफिर, नमाज सिर्री हो या जहरी |”(सहीह बुखारी ः किताबुल आजान बाब नंः 394)
2. इमाम अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक ؒ ः इमाम अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक ؒ इमाम के पीछे किरआत के कायल थे |(सुनन तिर्मिजी हदीस नं ः 311)
3. इमाम शाफई ؒ ः इमाम शाफई ؒ फरमाते है कि ः “किसी आदमी की नमाज जायज नहीं जब तक वो हर रकअत में सुरह फातेहा ना पढ ले, चाहे वो इमाम हो या मुक्तदी, इमाम बुलंद किरअत कर रहा हो या आहिस्ता, मुक्तदी पर ये लाजिम है कि वो हर नमाज में सुरह फातेहा पढें |” (मोरेफतुल सुनन वल आसार लिलबहैकी ः 2/ 58 हदीस नं ः 928)
4. इमाम अवजाई ؒः इमाम अवजाई ؒ ने बुलंद आवाज वाली नमाज में इमाम के पीछे सुरह फातेहा पढ़ने का हुक्म दिया | (किताबुल किरआत इमाम बहैकी हदीस नं ः247 सनद सहीह ः कवाकिबु दुर्रिय्या सफा ः29)
5. इमाम बहैकी ؒ ः इमाम बहैकी ؒ भी इमाम के पीछे किरआत के कायल थे | जिस पर उन्होंने “किताबुल किरआत” ये किताब लिखी |

इमाम के पीछे सुरह फातेहा पढ़ने वाले मुहद्दिसीनीन

नं	मुहद्दीसीनीन ﷺ के नाम	बहवाला
1.	इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी رحمه الله	(सहीह बुखारीःकिताबुल आजान बाब नंः 394)
2.	इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक رحمه الله	(सुनन तिर्मिजी हदीस नं ः 311)
3.	इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफई رحمه الله	(सुनन तिर्मिजी हदीस नं ः 311)
4.	इमाम अवजाई رحمه الله	(किताबुल किरआत इमाम बहैकी हदीस नं ः247)
5.	इमाम अहमद बिन हम्बल رحمه الله	(सुनन तिर्मिजी हदीस नं ः 311)
6.	इमाम इब्ने हिब्बान رحمه الله	(किताबुल किरआत बहैकी सफाः101 हदीस नंः 231)
7.	इमाम बहैकी رحمه الله	(जिस पर उन्होंने"किताबुल किरआत" ये किताब लिखी)
8.	इमाम इसहाक رحمه الله	(सुनन तिर्मिजी हदीस नं ः 311)
9.	इमाम इब्ने मुन्जिर अन्निसापूरी رحمه الله	(अल अवसत ः 3/110,111)
10.	इमाम इब्ने खुजैमा رحمه الله	(सहीह इब्ने खुजैमा ः 3/32 हदीस नं ः1581)

खुलासा ए कलामा

- इस तहकीक से साबित हुआ कि इमाम के पीछे किरआत(फोतहा)का सबुत **1.**रसुलुल्लाह ﷺ **2.**सहाबा किराम ﵃ **3.**ताबईन अज़ाम ﵏ **4.**और काबिले ऐतमाद अइम्माए इस्लाम से कौल और अमल से साबित हैं | लेहाजा ये कौल व अमल ना कुरआन के खिलाफ है और ना हदीस के और ना इज्माअ के | (वलहम्दुलिल्लाह)
- जिन रिवायात में किरआत से मनाह किया गया है और इन्सात (खामोशी) का हुक्म दिया गया है उनका सहीह मतलब सिर्फ यहीं है कि ः

  1.इमाम के पीछे आवाज से न पढ़ा जाए |(लुक्मा देना इसमें शामिल नहीं है)

  2.जहरी नमाज में सुरह फातेहा से ज्यादा ना पढ़ा जाए | (तक्बीर, तऊजु ,तस्मिया और लुक्मा देना इसमें शामिल नहीं हैं)
- इस ततबिक व तौफिक से तमाम दलाइल पर अमल हो जाता है और कोई ताअरूज व टकराव बाकी नहीं रहता और ये बात हर शख्स समज़ सकता है कि वो रास्ता इन्तेहाई पसंदीदा रास्ता है जिस पर चलते हुए कुरआन हदीस और इज्माअ व आसार सलफ सब पर अमल हो जाए और किसी किस्म का तआरूज़ और टकराव ना रहे |
- हाफीज अल्लाम्मा इब्ने अब्दुल बर ﵀ फरमाते है कि ः "और यकिनन उल्मा का इज़्माअ है कि जो शख्स इमाम के पीछे किरआत (सुरह फातेहा) पढ़ता है उसकी नमाज़ मुक्कमल है उसपर कोई इआद नहीं है |" (अल इस्तजकार 2 /193 व कवाकिबुदूर्रिय्या सफा ः 53)
- मौलाना अब्दुल हई लखनवी हनफी ﵀ ने साफ लिखा है कि ः "किसी मरफुअ सहीह हदीस में इमाम के पीछे सुरह फातेहा पढ़ने की मनाई वारीद (साबित) नहीं है और वो (मुखालिफिने फातेहा खल्फुल इमाम) जो भी मरफुअ अहादीस बयान करते है वो सहीह नहीं है या उसकी कोई असल नहीं है |"(अत्तालिकिल मुमज्जिद ः सफा ः 101 हाशिया नं ः 1)
- जो लोग इमाम के पिछे सुरह फातेहा नहीं पढते वो कहते कि इमाम की किरआत यानी सुरह फातेहा मुक्तदी के लिए काफी है | वो कहते है अगर नमाज में इमाम सुरह फातेहा ना पढे तो नमाज नाकीस होती है चाहे वो कोई भी नमाज हो |
- लेकिन नमाजे जनाजा में इमाम भी सुरह फातेहा नहीं पढता, तो फिर इस नमाज का क्या हुक्म है ?

- बल्कि सहीह बुखारी शरीफ में हदीस है कि ः जिस शख्स ने नमाज में सुरह फातेहा न पढी उसकी कोई नमाज नहीं |
- जनाजे की नमाज में सुरह फातेहा पढना साबित है | सहीह बुखारी किताबुल जनाइज में है कि ः सय्यदना तलहा बिन उबैदुल्लाह बिन औफ ﷺ से मरवी है कि मैंने अब्दुल्ला इब्ने अब्बास ﷺ के पिछे नमाजे जनाजा पढी उन्होंने उसमें बुलंद आवाज से सुरह फातेहा पढी और फरमाया कि ः (मैंने इस लिए सुरह फातेहा पढी है) ताकि तुम्हें मालुम हो जाए कि ये सुन्नत है |
- सुरह फातेहा तर्क करने के लिए जो आयते पेश की जाती है वो मक्की है और अहादीस मदनी दौर की है, और आपﷺ से बेहतर कौन कुरआन की तफसीर कर सकता है ?

6. जहर(बुलंद आवाज़) से आमीन कहना

आमीन में आवाज बुलंद करना और इमाम का जहर से आमीन कहना

सय्यदना वाइल बिन हुज्र ﷺ फरमाते हैं कि ः

रसुलुल्लाह ﷺ ने जब وَلَا الضَّالِّينَ पढा फिर आपने बुलंद आवाज से आमीन कही | (सुनन अबु दाऊद ः किताबुस्सलात हदीस नं ः 932 सुनन तिर्मिजी ःकिताबुस्सलात हदीस नं ः 247)	(1) - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بنُ كَثِيرٍ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عن سَلَمَةَ، عن حُجْرٍ أَبِي الْعَنْبَسِ الْحَضْرَمِيِّ، عن وائِلِ بنِ حُجْرٍ قال: كَانَ رسولُ الله ﷺ إِذَا قَرَأَ وَلَا الضَّالِّينَ قال: «آمِينَ» وَرَفَعَ بِهَا صَوْتَهُ.

हदीस की तहकीक

1) इमाम तिर्मिजी رحمه الله ने कहा ः "حسن" हसन है |
(सुनन तिर्मिजी हदीस नं ः 248)

2) इमाम दारे कतनी رحمه الله ने कहा ः"هذا صحيح" ये हदीस सहीह है |
(सुनन दारे कतनी ः 1/334)

3) हाफीज इब्ने हजर رحمه الله ने कहा ः"وسنده صحيح" इसकी सनद सहीह है |
(तल्खिसुल हबीर ः 1/236 हदीस नं ः 353)

4) हाफीज इब्ने कय्यिम رحمه الله ने कहा ः"واسناده صحح" इसकी सनद सहीह है |
(एअलामल मोक्किईन ः 2/396)

5) इमाम अल बग्वी رحمه الله ने कहा ः"هذا حديث حسن" ये हदीस हसन है |
(शरह अस्सुन्नाह ः 3/586)

मुक्तदी भी बुलंद आवाज से आमीन कहे

सय्यदना अताؒ ताबई फरमाते है कि ः

आमीन एक दुआ है और सय्यदना अब्दुल्लाह बिन जुबैरؓ और उनके मुक्तदियों ने इतनी बुलंद आवाज से आमीन कही कि मस्जिद गुंज उठी | सय्यदना अबु हुरैरा ؓ इमाम से कह दिया करते थे कि हमें आमीन से महरूम ना रखना और नाफेؒ ने कहा कि इब्ने उमर ؓ आमीन कभी नहीं छोडते थे और लोगों को उसकी तर्गिब दिया करते थे मैंने आपसे इसके मुत्तालिक एक हदीस भी सुनी थी |(सहीह बुखारी किताबुल अज़ान बाब ः इमाम का बुलंद आवाज से आमीन कहना व मुस्सन्निफ अब्दुर्रजाक ः 2640)	(2) وَقَالَ عَطَاءٌ آمِينَ دُعَاءٌ. أَمَّنَ ابْنُ الزُّبَيْرِ وَمَنْ وَرَاءَهُ حَتَّى إِنَّ لِلْمَسْجِدِ لَلَجَّةً. وَكَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يُنَادِي الْإِمَامَ لَا تَفْتِنِي بِآمِينَ. وَقَالَ نَافِعٌ كَانَ ابْنُ عُمَرَ لَا يَدَعُهُ وَيَحُضُّهُمْ وَسَمِعْتُ مِنْهُ فِي ذَلِكَ خَيْرًا.

आमीन से गुनाह की मुआफ़ी

सय्यदना अबु हुरैरा ؓ फरमाते है कि ः

रसुलल्लाह ﷺ ने फरमाया ः “जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो,जिस शख्स की आमीन फरिश्तों की आमीन के मुआफिक(बराबर)हो गयी तो उसके पिछले गुनाह मुआफ कर दिए जाते है | इब्ने शिहाब ؒ कहते है कि रसुलुल्लाहﷺ आमीन कहते थे |”(सहीह बुखारी किताबुल अज़ान बाब ः इमाम का बुलंद आवाज से आमीन कहना हदीस नं ः780)	(3) ـ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُمَا أَخْبَرَاهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ إِذَا أَمَّنَ الْإِمَامُ فَأَمِّنُوا فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ تَأْمِينُهُ تَأْمِينَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَقَالَ ابْنُ شِهَابٍ وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ آمِينَ.

यहुदी आमीन से चिड़ते थे

उम्मुल मोमीनीन आइशा ﷺ से रिवायत है कि ః

नबी ﷺ ने फरमाया ః "यहुदी तुमसे किसी चीज पर इतना हसद नहीं करते जितना सलाम और आमीन पर तुमसे हसद करते है।" (सुनन इब्ने माज़ा बाब ః बुलंद आवाज से आमीन कहना हदीस नं ః 856)	(4) - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الْوَارِثِ: حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ: حَدَّثَنَا سُهَيْلُ بْنُ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «مَا حَسَدَتْكُمُ الْيَهُودُ عَلَى شَيْءٍ مَا حَسَدَتْكُمْ عَلَى السَّلَامِ وَالتَّأْمِينِ».

तश्रीहुल हदीस

- इस हदीस को रिवायत किया इमाम बुखारी ने अपनी किताब अदबुल मुफर्रद (हदीस नं ః 988) में और इस हदीस को सहीह कहा इमाम इब्ने खुजैमा ने अपनी किताब सहीह इब्ने खुजैमा (हदीस नं :574) में।
- इमाम इब्ने मूंजर ने अत्तरगीब अत्तरहीब (1/328 हदीस नं ః 719) में और इमाम अल बौसीरी ने अत्तहजीब (3/219) में इस हदीस को सहीह कहा।

वो उलमा जो जहर से आमीन कहने के क़ाइल हैं

इमाम तिर्मिज़ी ﷺ फरमाते हैं ః

और यही क़ौल बहुत से अहले इल्म का है जो नबी ﷺ के सहाबा, ताबेईन और उन के बाद वाले हैं कि आदमी अपनी आवाज़ को आमीन कहते वक़्त बलंद करे आवाज़ को पस्त ना करे। और यही बात शाफेई ﷺ, अहमद ﷺ और इस्हाक ﷺ ने कही है। (सुनन तिर्मिज़ी ః किताबुस्सलात हदीस नं ః 248)	وَبِهِ يَقُولُ غَيْرُ وَاحِدٍ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ وَالتَّابِعِينَ وَمَنْ بَعْدَهُمْ يَرَوْنَ أَنَّ الرَّجُلَ يَرْفَعُ صَوْتَهُ بِالتَّأْمِينِ وَلَا يُخْفِيهَا وَبِهِ يَقُولُ الشَّافِعِيُّ وَأَحْمَدُ وَإِسْحَقُ [ت: الصلاة 248 بتحقيق الألباني]

शुब्हात और उनके जवाबात

सवाल ः बाज लोग कहते है कि आमीन दुआ इसलिए उसे आहीस्ता कहना चाहीए |

जवाब ः

- **रसुलुल्लाहﷺ ने जो दुआ खुफियां की है वो खुफियां करनी चाहीए और जो दुआ जहरन की है उसे जहरन करनी चाहीए | क्योंकि आमीन बिल जहर आपﷺ और आपﷺ के जानशीन सहाबा ﷺ से साबित है लेहाजा आमीन बिल जहर कहनी चाहीए | इमाम मुस्लिमؒ कहते है कि ः "सारी मुतवातीर अहादीस से साबित है कि नबीﷺ आमीन बिल जहर यानी बुलंद आवाज से कहा करते थे |"(अल तमिज कल्मी लिइमाम मुस्लिम सफा ः 9)**
- **अगर हनफियां के नजदीक हर दूआ खुफियां पढ़ना लाजिम है तो वो खुद अपने इस कौल के खिलाफ बुलंद आवाज से दुआ करते है मसलनः 1.फर्ज नमाजों के बाद बाज हनफी मसाजिद में बुलंद आवाज से दुआ की जाती है और उनके मुक्तदी भी ऊंची आवाज से आमीन कहते है | 2.तब्लिगी इज्तेमाअत के आखरी दिन लाऊड़ स्पिकर पर बुलंद आवाज से दुआ की जाती है और और लोग भी दुआ पर जहरन आमीन कहते है |**
- **इसीतरह सलाम कहना भी दुआ है लकिन उसे आहिस्ता कहना साबित नहीं |**

7.उंगली (सब्बाबा)को मुसल्सल हरकत देना

हदीस नं ः1

सय्यदना वाइल बिन हुज्र ﷺ फरमाते हैं ः

मैं ने (अपने दिल में) कहा ः"मैं ज़रूर अल्लाह के रसूल ﷺ की नमाज़ देखूंगा कि आप ﷺ कैसे नमाज़ पढते हैं |" तो मैं ने आप ﷺ को बग़ौर देखा	तो सय्यदना वाइल ﷺ ने आप ﷺ की नमाज़ की कैफियत बयान की और कहा ः "फिर आप ﷺ बैठे और अपने बाएं पैर को बिछाया और अपनी बाई हथेली अपनी रान और बाएं घुटने पर रखी और अपनी दाई कोहनी को दाई रान पर रखा, फिर अपनी उंगलियों में से दो को बंद किया और एक हल्का बनाया फिर अपनी उंगली को उठाया तो मैं ने देखा कि आप उस को हरकत दे रहे थे और उस से दुआ कर रहे थे |" (सुनन नसाई किताबुस्सहू हदीस नं ः 1268)	أَخْبَرَنَا سُوَيْدُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ زَائِدَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ كُلَيْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي أَنَّ وَائِلَ بْنَ حُجْرٍ قَالَ: قُلْتُ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى صَلَاةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ كَيْفَ يُصَلِّي، فَنَظَرْتُ إِلَيْهِ فَوَصَفَ قَالَ: ثُمَّ قَعَدَ وَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ كَفَّهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ وَرُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَجَعَلَ حَدَّ مِرْفَقِهِ الْأَيْمَنِ عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى ثُمَّ قَبَضَ اثْنَتَيْنِ مِنْ أَصَابِعِهِ وَحَلَّقَ حَلْقَةً، ثُمَّ رَفَعَ أُصْبُعَهُ فَرَأَيْتُهُ يُحَرِّكُهَا يَدْعُو بِهَا.

हदीस की तहकीक

- सनद की तहकीक ः इस हदीस की सनद सहीह है |
- रावी हदीस ः वाईल बिन हुज्र ﷺ ः सहाबी जलील (अत्तकरीबुत्तहजीब ः 7393) , कुलैब ﷺ ः सदूक यानी सच्चे(अत्तकरीबुत्तहजीब ः 5660), आसिम बिन कुलैब ﷺ ः सदूक (अत्तकरीबुत्तहजीब ः 3075)सहीह मुस्लिम के रावी, जाईदाह बिन कुदामा ﷺ ः सिका साहीबे सुन्नत साबित शुदा(अत्तकरीबुत्तहजीब ः 1262)

हदीस नं ः2

तशह्हुद में बैठते ही उंगली से इशारा करना चाहिए

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन जुबैर ﷺ फरमाते हैं ः

अल्लाह के रसूल ﷺ जब(अत्तहिय्यात) में बैठते तो दाहना हाथ दाई रान पर और बाया हाथ बाई रान पर रखते और सब्बाबा से इशारा करते और अपने अंगूठे को अपनी दरमियानी उंगली पर रखते,और बाई हथेली को अपने घुटने पर टिकाते | (सहीह मुस्लिम ः किताबुल मसाजिद व मवाज़िउ स्सलाति हदीस नं ः 910)	كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا قَعَدَ يَدْعُو وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَيَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى وَأَشَارَ بِإِصْبَعِهِ السَّبَّابَةِ وَوَضَعَ إِبْهَامَهُ عَلَى إِصْبَعِهِ الْوُسْطَى وَيُلْقِمُ كَفَّهُ الْيُسْرَى رُكْبَتَهُ [م: المساجد ومواضع الصلاة : 910]

हदीस नं ः 3

ऊंगली से इशारा करना इस्तिग़फार है

सय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास ﷺ फरमाते हैं ः

(अल्लाह तआला से) मांगने का तरीक़ा यह है कि अपने हाथों को अपने दोनों कंधों तक या उस के बराबर उठाए | और इस्तिग़फार यह है कि एक उंगली से इशारा करे | और इब्तिहाल यह है कि अपने दोनों हाथ एक साथ खूब फैलाए |(सुनन अबु दाउद) (सहीह)(सहीह अल जामे ः 6694)	الْمَسْأَلَةُ أَنْ تَرْفَعَ يَدَيْكَ حَذْوَ مَنْكِبَيْكَ أَوْ نَحْوَهُمَا وَالِاسْتِغْفَارُ أَنْ تُشِيرَ بِأُصْبُعٍ وَاحِدَةٍ وَالِابْتِهَالُ أَنْ تَمُدَّ يَدَيْكَ جَمِيعًا (د) عن ابن عباس . (صحيح) [صحيح الجامع 6694]

इशारा करना सलाम तक है

हदीस नं ः 4

सय्यदना जाबिर बिन समुरा ﷺ फरमाते हैं:

हम अल्लाह के रसूल ﷺ के पीछे नमाज़ पढते थे हम में से जब कोई सलाम फेरता तो अपने हाथ से अपनी दाई और बाई जानिब इशारा करता | पस जब अल्लाह के रसूल ﷺ नमाज़ से फारिग़ हुए तो कहा ः"तुम को क्या हो गया तुम अपने हाथ से इशारा करते हो गोया कि सर्कश घोडों की दुम हैं | तुम्हारे लिए इतना ही काफी है या फरमाया क्या तुम्हारे लिए इतना काफी नहीं है कि वो इस तरह़ करे?और अपनी एक उंगली से इशारा करे, और अपने दाएं और बाएं जानिब अपने भाई पर सलाम भेजे |"(सह़ीह़) (सुनन अबु दाऊद ः किताबुस्सलात हदीस नं ः 998)	حَدَّثَنا عُثْمَانُ بنُ أبي شَيْبَةَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بنُ زَكَرِيَّا وَوَكِيعٌ عن مِسْعَرٍ عن عُبَيْدِالله بنِ الْقِبْطِيَّةِ، عن جَابِرِ بنِ سَمُرَةَ قال: كُنَّا إذَا صَلَّيْنَا خَلْفَ رسولِ الله ﷺ فَسَلَّمَ أَحَدُنَا أشَارَ بِيَدِهِ مِنْ عن يَمِينِهِ ومِنْ عن يَسَارِهِ، فَلَمَّا صَلَّى قال: «مَا بَالُ أَحَدِكُم يُومِي بِيَدِهِ كَأنَّهَا أذْنَابُ خَيْلٍ شُمْسٍ، إنَّمَا يَكْفِي أَحَدَكُمْ - أوْ ألَا يَكْفِي أَحَدَكُمْ أنْ يقولَ هكَذا - وَأشَارَ بِإصْبَعِهِ - يُسَلِّمُ عَلَى أخِيهِ مِنْ عن يَمِينِهِ وَمِنْ عن شِمَالِهِ».

8.जलसा ए इस्तराहत

हदीस नं ः1

सय्यदना मालिक बिन हुवैरस ﵁ फरमाते है कि ः

उन्होंने नबी ﷺ को नमाज़ पढ़ते हुए देखा जब आप ﷺ नमाज़ की ताक रकआतों (यानी पहली और तीसरी रकआत) में होते तो (दूसरे सज़्दे के बाद) एकदम खड़े न होते थे बल्कि बैठ जाते (फिर खड़े होते थे) |(सहीह बुखारी किताबुल अजान बाब ः तशह्हुद में बैठने का तरीका हदीस नं ः 823)	عن مالكُ بنُ الحُوَيرِثِ اللَّيثيُّ أنه رأى النبيَّ ﷺ يُصلِّي ، فإذا كان في وترٍ من صلاتهِ لم يَنهضْ حتى يَستَوِىَ قاعداً

तश्रीहुल हदीस नं ः 1

- इस हदीस पाक से जल्साए इस्तराहत की मश्रूयित साबित होती है |
- सय्यदना अबु हुमैद अस्साइदी ﵁ की तवील हदीस में आया है कि रसुलुल्लाह ﷺ नमाज़ शुरू करते वक्त ,रूकु से पहले और रूकु के बाद रफउल यदैन करते थे,पहली रकअत में दूसरे सज़्दे से फारीग होते तो बैठ जाते, दो रकआते पढ़ कर जब खड़े होते तो रफउल यदैन करते, और आखरी रकआत में “तव्वर्रूक” करते |(सुनन तिर्मिजी हदीस नं ः 304 इमाम तिर्मिजी ﵀ कहते है कि ये हदीस हसन सहीह है)

वो उलमा जो जलसा ए इस्तिराहत के क़ाइल हैं

हाफीज इब्ने हजर ؒ फरमाते हैं ः

इस में जलस ए इस्तिराहत की मश्रूइयत की दलील है और इसी से शाफेई ؒ और अहले हदीस की एक जमात ने दलील ली है, और इमाम अहमद ؒ से दो रिवायतें मन्कूल हैं, खल्लाल ؒ ने इस का तज़किरा किया है कि इमाम अहमद ؒ ने इसी हदीस के मुताबिक़ कौल की तरफ रूजूअ किया है | (फतहुल बारी लिइब्ने हजर ः किताबुल अज़ान बाबु ः मनिस्तवा क़ाइदन फि वितरिन मिनसलातिहि)	وَفِيهِ مَشْرُوعِيَّة جِلْسَة الِاسْتِرَاحَة وَأَخَذَ بِهَا الشَّافِعِيّ وَطَائِفَة مِنْ أَهْل الْحَدِيث وَعَنْ أَحْمَد رِوَايَتَانِ وَذَكَرَ الْخَلَّال أَنَّ أَحْمَد رَجَعَ إِلَى الْقَوْل بِهَا [فتح الباري لابن حجر: الآذان : بَاب مَنْ اِسْتَوَى قَاعِدًا فِي وِتْر مِنْ صَلَاته]

इमाम तिर्मिजी ؒ लिखते है कि ः

और इस पर बाज़ अहले इल्म का अमल है और यही कौल इस्हाक ؒ और हमारे बाज़ साथियों का है | (सुनन तिर्मिज़ी किताबुस्सलाह हदीस नं ः 287)	وَالْعَمَلُ عَلَيْهِ عِنْدَ بَعْضِ أَهْلِ الْعِلْمِ وَبِهِ يَقُولُ إِسْحَقُ وَبَعْضُ أَصْحَابِنَا [ت: الصلاة 287]

9.तशहहुद में बैठने का तरीका ः तवर्रूक

हदीस

सय्यदना मुहम्मद बिन अम्र बिन अता ﷺ फरमाते है कि ः

عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ أَنَّهُ كَانَ جَالِسًا مَعَ نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرْنَا صَلَاةَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ السَّاعِدِيُّ أَنَا كُنْتُ أَحْفَظَكُمْ لِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَيْتُهُ إِذَا كَبَّرَ جَعَلَ يَدَيْهِ حِذَاءَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ أَمْكَنَ يَدَيْهِ مِنْ رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ هَصَرَ ظَهْرَهُ فَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ اسْتَوَى حَتَّى يَعُودَ كُلُّ فَقَارٍ مَكَانَهُ فَإِذَا سَجَدَ وَضَعَ يَدَيْهِ غَيْرَ مُفْتَرِشٍ وَلَا قَابِضِهِمَا وَاسْتَقْبَلَ بِأَطْرَافِ أَصَابِعِ رِجْلَيْهِ الْقِبْلَةَ فَإِذَا جَلَسَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ جَلَسَ عَلَى رِجْلِهِ الْيُسْرَى وَنَصَبَ الْيُمْنَى وَإِذَا جَلَسَ فِي الرَّكْعَةِ الْآخِرَةِ قَدَّمَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَنَصَبَ الْأُخْرَى وَقَعَدَ عَلَى مَقْعَدَتِهِ.

वो अल्लाह के नबी ﷺ के सहाबा के साथ बैठे हुए थे, हम ने नबी ﷺ की नमाज़ का तज़किरा किया| अबू हुमैद अस्साइदी ﷺ ने कहा मैं तुम में अल्लाह के रसूल ﷺ की नमाज़ को सब से ज़्यादा याद रखने वाला हूं | मैं ने आप ﷺ को देखा जब आप ने तकबीर कही तो अपने दोनों हाथों को अपने दोनों कांधो के बराबर किया, और जब रूकू किया तो अपने दोनों हाथों को अपने घुटनों पर जमा दिया फिर अपनी पीठ को झुकाया फिर जब अपना सर उठाया तो सीधे खडे हो गए यहां तक कि हर हड्डी अपनी जगह पर लौट आई, और जब आप ﷺ ने सज्दा किया तो आप ﷺ ने अपने दोनों हाथों को ना बिछाए रखा और ना समेटे रखा, और अपने पैरों की उंगलीयों को किब्ला रूख किया, जब आप ﷺ दो रकातों के बाद बैठे तो अपने बाएं पैर पर बैठे और दाहने पैर को खडा किया, और जब आप ﷺ आखरी रकात में बैठे तो अपने बाएं पैर को दराज़ किया और दूसरे को खडा किया और अपनी सुरीन के बल बैठ गए |

(सहीह बुखारी किताबुल अजान बाब ः तशहहुद में वैठने का तरीका हदीस नं ः 828)

10.खडे होते वक़्त ज़मीन पर एतमाद करना(सहारा लेना)

हदीस़ नं ः 1

सय्यदना अबु किलाबा رحمه الله ताबई फरमाते है कि ः

हमारे पास मालिक बिन हुवैरिस رضي الله عنه आए और हमारे साथ इस मस्जिद में हम को नमाज़ पढाई। उन्होंने कहा ः "मैं तुम को नमाज़ पढाउंगा और मैं महज़ इबादत का इरादा नहीं रखता लेकिन मैं चाहता हूं कि तुम को दिखाउं कि नबी ﷺ किस तरह़ नमाज़ पढते थे?"अय्यूब رحمه الله कहते हैं कि मैं ने अबू किलाबा رحمه الله से कहा कि उन की नमाज़ कैसी होती थी? अबू किलाबा رحمه الله ने कहा कि हमारे इस उस्ताद की तरह़। यानी अम्र बिन सलमा رحمه الله । अय्यूब رحمه الله ने कहा कि वो शेख तकबीर पूरी किया करते थे ।और जब दूसरे सज्दे से सर उठाते तो बैठते और ज़मीन पर एतमाद करते(यानी ज़मीन का सहारा लेते)फिर खडे होते ।(सहीह बुखारी किताबुल अजान बाब ःजब नमाज़ में आदमी किसी रकअत से खड़ा होने लगे तो ज़मीन पर किस तरह टेक लगाए हदीस नं ः 823)	عَنْ أَبِي قِلَابَةَ قَالَ جَآءَ نَا مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ فَصَلّٰى بِنَا فِيْ مَسْجِدِنَا هٰذَا فَقَالَ إِنِّيْ لَأُصَلِّيْ بِكُمْ وَمَا أُرِيْدُ الصَّلَاةَ وَلٰكِنْ أُرِيْدُ أَنْ أُرِيَكُمْ كَيْفَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّيْ قَالَ أَيُّوْبُ فَقُلْتُ لِأَبِيْ قِلَابَةَ وَكَيْفَ كَانَتْ صَلَاتُهُ قَالَ مِثْلَ صَلَاةِ شَيْخِنَا هٰذَا يَعْنِيْ عَمْرَو بْنَ سَلِمَةَ قَالَ أَيُّوْبُ وَكَانَ ذٰلِكَ الشَّيْخُ يُتِمُّ التَّكْبِيْرَ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ عَنِ السَّجْدَةِ الثَّانِيَةِ جَلَسَ وَاعْتَمَدَ عَلَى الْأَرْضِ ثُمَّ قَامَ.

सय्यदना अब्दुल्लाह इब्ने उमर ﷠ का अमल

सय्यदना अज़रक बिन कैस ﷫ फरमाते हैं:

मैं ने इब्ने उमर ﷠ को देखा जब वो दो रकात से खड़े होते तो अपने दोनों हाथों से ज़मीन का सहारा लेते | मैं ने अपने बेटे और साथियों से कहा ः"शायद यह बुढ़ापे की वजह से करते हैं?" उन्होंने कहा: "नहीं, बल्कि (उन का मामूल) यहीं है |" (सनदहु सहीह ः सुनन कुबरा बैहकी किताबुस्सलाति ः 2920 व मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा हदीस नं ः 3996)	رَأَيْتُ ابْنَ عُمَرَ إِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ اعْتَمَدَ عَلَى الأَرْضِ بِيَدَيْهِ. فَقُلْتُ لِوَلَدِهِ وَلِجُلَسَائِهِ : لَعَلَّهُ يَفْعَلُ هَذَا مِنَ الْكِبَرِ؟ قَالُوا : لاَ وَلَكِنْ هَذَا يَكُونُ. [البيهقي : كتاب الصلاة 2920]

वो(उलमा) जो खडे होते वक़्त ज़मीन पर एतमाद के क़ाइल है

इमाम इब्नुल मुंज़ीर رحمه الله फरमाते हैं ः

और एक जमात ने कहा ः नमाज़ में बैठे फिर जब इतमीनान से बैठ जाए तो ज़मीन पर एतमाद (सहारा) ले कर उठे | इमाम शाफेई رحمه الله ने मालिक बिन हुवैरिस رضي الله عنه की ह़दीस से दलील लेते हुए यह बात कही है |(अल औसत फिस्सुनन वल इजमा वल इख्तिलाफ ः1504)	وَقَالَتْ طَائِفَةٌ: يَقْعُدُ فَإِذَا اسْتَوَى قَاعِدًا قَامَ فَاعْتَمَدَ عَلَى الْأَرْضِ هَذَا قَوْلُ الشَّافِعِيِّ وَاحْتَجَّ بِحَدِيثِ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ [الأوسط في السنن والإجماع والاختلاف 1504]

इमाम बैहकी رحمه الله फरमाते हैं ः

और इसी तरह़ ह़सन (बसरी) رحمه الله और एक से ज़्यादा ताबेईन किया करते थे | (सुनन कुबरा बैहकी ः किताबुस्सलात ः 2920)	وَكَذَلِكَ كَانَ يَفْعَلُ الْحَسَنُ وَغَيْرُ وَاحِدٍ مِنَ التَّابِعِينَ. [هق : الصلاة 2920]